वैश्विक संवाद

7.3

17 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

इतालवी समाजशास्त्र

मेतियो बोरतोलिनी,
रिकार्डो एमिलियो चेस्ता,
एन्ड्रिया कोसू,
फ्लेमिनियो स्कवाज्जोनी,
अलीअकबर अकबरितबार,
एनालिसा मुर्गिया,
बारबरा पोगिया,
मैसिमिलियनो वैरा

वैश्विक युग का अंत

मार्टिन एल्ब्रो

कोसोवा में उपनिवेशी विरासत

इब्राहिम बेरिशा

एओतियारोआ से समाजशास्त्र

स्टीव मैथ्यूमेन,
होली थोर्प,
एलिजाबेथ स्टेनली,
डायलन टेलर,
रोबर्ट वेब

विशिष्ट कॉलम

> ईश्वर मोदी को याद करते हुए

> तुर्की संपादकीय दल का परिचय

पत्रिका

अंक 7 / क्रमांक 3 / सितम्बर 2017
http://isa-global-dialogue.net/

GD

International Sociological Association

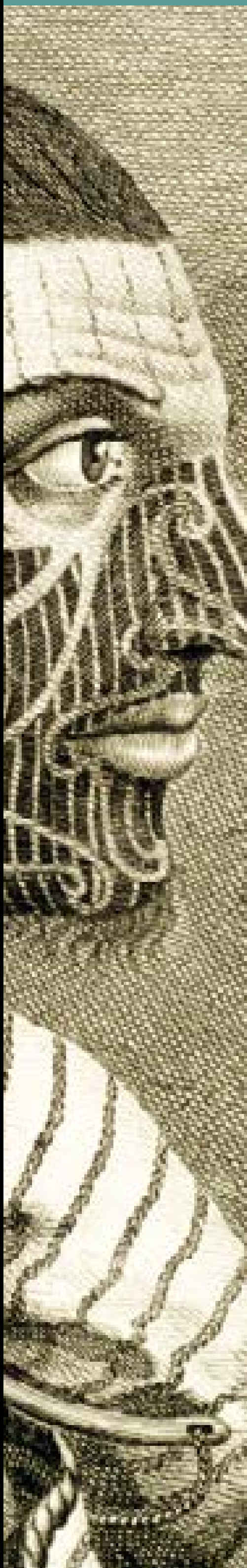

> सम्पादकीय

वैश्विक समाजशास्त्र की चुनौती

आई. एस. ए. के साथ मेरी गत दस वर्षों की संलग्नता पर जब मैं चिंतन करता हूं, मैं समाजशास्त्र के स्वरूप पर अन्तर्वस्तु पर राष्ट्रीयता के निरंतर प्रभाव से चकित हूं। हमारे पास शोध समितियों, थिमेटिक समूहों और कार्यशील समूहों की श्रृंखला के साथ आई. एस. ए. में अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्र की उपस्थिति है। फिर भी, इनके भी अक्सर राष्ट्रीय या प्रादेशिक पहलू हैं। एक सहज लगभग प्रारंभिक इकाई जिसके इर्दगिर्द अधिकांश समाजशास्त्री घूमते हैं वह वैश्विक होने की बजाय राष्ट्रीय होती है। हमारे पास वैश्विक समाजशास्त्र है, लेकिन डिजिटल युग के इस समय में भी एक वैश्विक समुदाय के साथ वैश्विक समाजशास्त्र को पाना काफी कठिन है। हमारे समक्ष आने वाली समस्याओं – शरणार्थी, प्रवास, जलवायु परिवर्तन, वित्तीय पूंजी, उच्च शिक्षा का व्यवसायीकरण – का वैश्विक परिप्रेक्ष्य है और चाहे हम उस पक्ष का अध्ययन करें, उनके बारे में सिद्धान्त प्रस्तुत करें, समाजशास्त्रियों के विशिष्ट वैश्विक समुदाय का निर्माण करना चुनौतीपूर्ण है। कुछ हद तक यह संस्कृति का और विशेष रूप से भाषाई–विविधता का प्रतिबिंब है; कुछ हद तक समाजशास्त्र का दृष्टिकोण–नागरिक समाज किस प्रकार राष्ट्र–राज्य के साथ सम्बन्ध से राष्ट्रीय रूप से गठित होता है का परिणाम है। उच्च शिक्षा का क्षेत्र, जो गहन रूप से संसारणात्मक है और जिसकी स्थिति विश्व में काफी भिन्न हैं, को काबू में रखना भी काफी कठिन है। यद्यपि यह कहना चाहिए वैषयिक असमानता देश के भीतर भी उतनी गहरी हो सकती है जितनी देशों के मध्य। वास्तव में, जितना भी वैश्विक समुदाय है, वह गतिशील और संसाधन सम्पन्न विश्व–बंधुओं का विशेषाधिकार प्राप्त समूह है जो स्वयं को संसाधनों की कमी से जूझते स्थानीय से अलग करते हैं।

इस अंक में, हमारे पास समाजशास्त्र पर राष्ट्रीयता के प्रभाव के दो विरोधाभासी उदाहरण है। इतालवी समाजशास्त्र को चर्च, कम्यूनिस्ट पार्टी और समाजवादी पार्टी के साथ अपने लगाव के साथ साथ दीर्घावधि के उत्तर–दक्षिण विभाजन के कारण ऐतिहासिक रूप से बाल्कनाइज किया गया। यदि इतालवी राजनीति विज्ञान फासीवाद के साथ अपने सम्बन्धों के कारण अप्रतिष्ठित हुआ है, इतालवी समाजशास्त्र ने रेड ब्रिगेड के साथ अपने सम्बन्ध और अन्य अतिवादी झुकावों के कारण प्रतिष्ठा खोई है। दूसरी तरफ, न्यूजीलैंड समाजशास्त्र का सामाजिक नीति में ब्रिटिश परंपराओं के साथ जुड़ाव है और वह देश की आंतरिक औपनिवेशिक विरासत के साथ संघर्ष करता है। यह एक छोटा द्वीप है जो अपने शक्तिशाली पड़ोसी आस्ट्रेलिया से डरता है।

संक्षेप में, समाजशास्त्र पर वैश्विक प्रभाव सामान्यतः राष्ट्रीय विरासतों और किलाबंदी द्वारा मध्यस्थ किया जाता है। विश्व में राष्ट्रों की स्थिति का समाजशास्त्र के निर्माण पर नाटकीय प्रभाव पड़ा है; अतः इब्राहिम बेरिशा के साथ साक्षात्कार कोसोवा में अल्बिनियाईयों के औपनिवेशिक अनुभवों पर जोर देता है जबकि मार्टिन एल्ब्रो के साथ साक्षात्कार ब्रिटेन के वैश्विक प्रभाव पर फोकस करता है।

हमारे गत अंक के बाद हमने राष्ट्रीय और वैश्वीकरण के सबसे अधिक उत्साही पैरोकार को खो दिया है। ईश्वर मोदी वैश्विक संवाद और उसके हिन्दी अनुवाद के प्रति समर्पित थे। इसके साथ वे आराम के समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण के पथ प्रदर्शक भी थे। उनकी कमी बहुत महसूस होगी लेकिन उनका प्रोजेक्ट चलता रहेगा।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

इतालवी समाजशास्त्री *इटली में समाजशास्त्र के लिये युद्ध पर चर्चा करते हुए*

मार्टिन एल्ब्रो, *विख्यात समाजशास्त्री, वैश्विक समाजशास्त्र की तरफ उनके पथ का ब्यौरा देते हुए*

एक उपनिवेशी अनुभव के रूप में कोसोवो में अल्बानियाई की दुर्दशा का ***इब्राहिम बेरिशा*** *वर्णन करते हैं।*

एओतियारोआ से समाजशास्त्री *समाज में उनके विभिन्न हस्तक्षेपों के बारे में लिखते हैं।*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

English edition: ISSN 2519-8688

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Argentina:
Juan Ignacio Piovani, Pilar Pi Puig, Martín Urtasun.

Bangladesh:
Habibul Haque Khondker, Hasan Mahmud, Juwel Rana, US Rokeya Akhter, Toufica Sultana, Asif Bin Ali, Khairun Nahar, Kazi Fadia Esha, Helal Uddin, Muhaimin Chowdhury.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Benno Alves, Julio Davies.

India:
Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Pragya Sharma, Nidhi Bansal, Pankaj Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Niayesh Dolati, Sina Bastani, Mina Azizi, Vahid Lenjanzadeh.

Japan:
Satomi Yamamoto, Masataka Eguchi, Izumi Ishida.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Adil Rodionov, Gani Madi, Almash Tlespayeva, Kuanysh Tel.

Poland:
Jakub Barszczewski, Katarzyna Dębska, Paulina Domagalska, Adrianna Drozdrowska, Łukasz Dulniak, Jan Frydrych, Krzysztof Gubański, Sara Herczyńska, Kinga Jakieła, Justyna Kościńska, Kamil Lipiński, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Zofia Penza, Teresa Teleżyńska, Anna Wandzel, Jacek Zych, Łukasz Żołądek.

Romania:
Cosima Rughiniș, Raisa-Gabriela Zamfirescu, Tatiana Cojocari, Andrei Crăciun, Diana Alexandra Dumitrescu, Iulian Gabor,
Alexandra Isbășoiu, Rodica Liseanu, Anda-Olivia Marin, Andreea Elena Moldoveanu, Oana-Elena Negrea, Mioara Paraschiv, Ion Daniel Popa.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Anastasia Daur.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultant: Gustavo Taniguti.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : वैश्विक समाजशास्त्र की चुनौती 2

> इतालवी समाजशास्त्र की स्थिति

21वीं सदी के मोड़ पर इतालवी समाजशास्त्र
मेतियो बोरतोलिनी, इटली द्वारा 4

ग्राम्शी, अपने ही देश में एक अजनबी
रिकार्डो एमिलियो चेस्ता, इटली द्वारा 6

दो मुँहा इतालवी समाजशास्त्र, 1945–1965
एन्ड्रिया कोसू, इटली द्वारा 8

इतालवी समाजशास्त्र का अंतर्राष्ट्रीयकरण, 1970 के दशक से 2010 के दशक तक
फ्लेमिनियो स्कवाज्जोनी और **अलीअकबर अकबरितबार, इटली** द्वारा 10

इतालवी समाजशास्त्र में लैंगिक स्टिरियोटाइप
एनालिसा मुर्गिया, यू.के. और **बारबरा पोगिया, इटली** द्वारा 12

एक प्रभावी विषय : इतालवी अकादमिक जगत में समाजशास्त्र
मैसिमिलियनो वैरा, इटली द्वारा 14

> दुनिया भर से साक्षात्कार

वैश्विक युग का अंत? मार्टिन एल्ब्रो के साथ एक साक्षात्कार
रायसा–गेबरियला जामफिरेस्कू और **डायना–एलेक्जेन्ड्रा दुमितरेस्कू, रोमानिया** द्वारा 16

कोसोवा में उपनिवेशवाद की विरासत : इब्राहिम बेरिशा के साथ एक साक्षात्कार
लेबिनोत कुनुशेव्की, कोसोवा द्वारा 19

> एओतियारोआ न्यूजीलैंड से समाजशास्त्र

आपदा–पश्चात के ओताही में शक्ति की राजनीति
स्टीव मैथ्यूमेन, एओतियारोआ न्यूजीलैंड द्वारा 22

आपदा पश्चात के भूगोल में सृजनशील खेल
होली थोर्प, एओतियाराओ न्यूजीलैंड द्वारा 24

प्रताड़ना को दबाना
एलिजाबेथ स्टेनली, एओतियाराओ न्यूजीलैंड द्वारा 26

सक्रियतावाद और अकादमिक जगत
डायलन टेलर, एओतियाराओ न्यूजीलैंड द्वारा 28

एक देशज अपराधशास्त्र की तरफ
रोबर्ट वेब, एओतियाराओ न्यूजीलैंड द्वारा 30

> ईश्वर मोदी की स्मृति में (1940–2017)

अवकाश का अध्ययन उनका जुनून था
राजीव गुप्ता, भारत द्वारा 32

प्रेरणा और प्रोत्साहन का एक स्त्रोत
कार्ल स्प्रेक्लेन, यू.के. द्वारा 34

> विशिष्ट स्तम्भ

टर्किश सम्पादकीय दल का परिचय
गुल कोरबासिया ग्लू और **इरमाक इवरेन, टर्की** द्वारा 36

>21वीं सदी के मोड़ पर

इतालवी समाजशास्त्र

मेतियो बोरतोलिनी, पडोवा विश्वविद्यालय, इटली

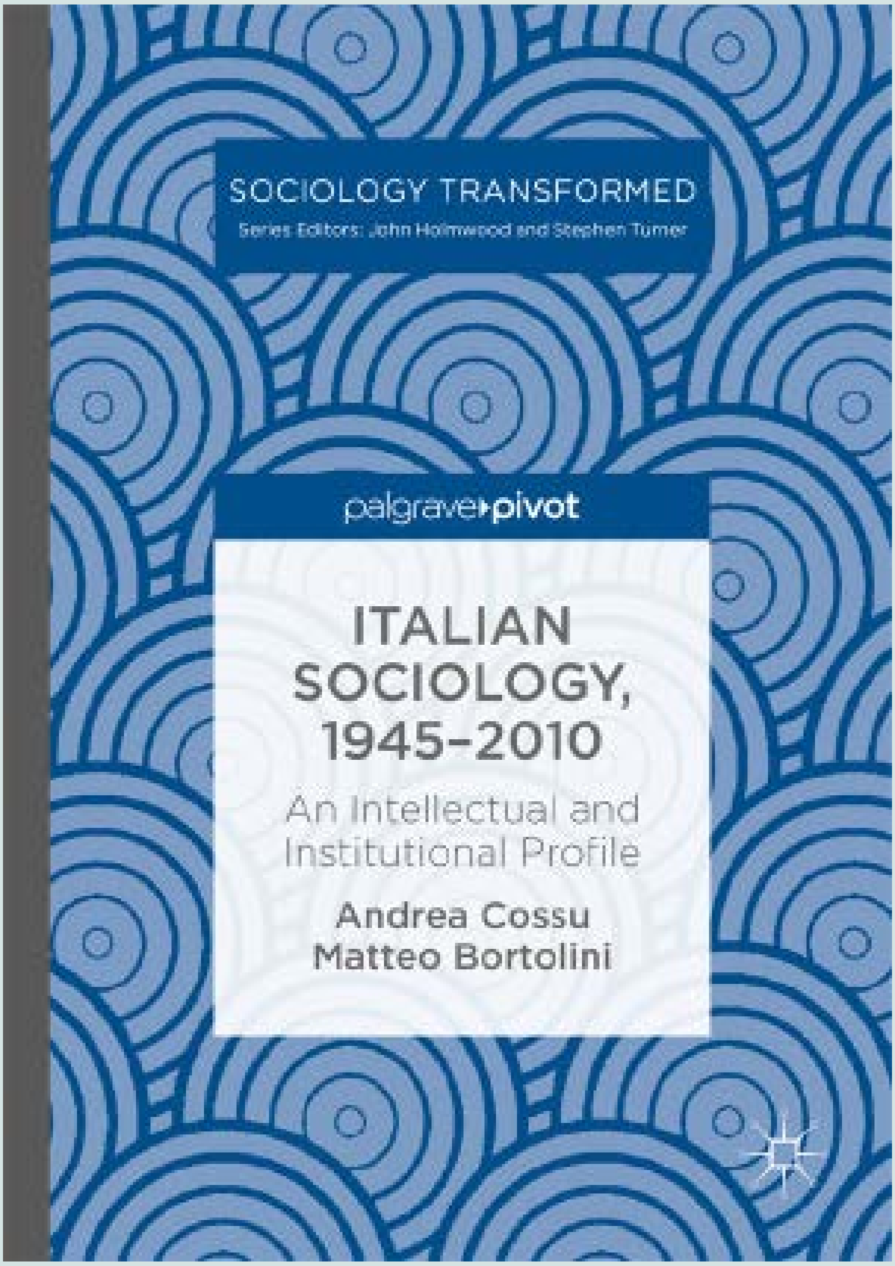

हाल ही में प्रकाशित, इतालवी समाजशास्त्र, 1945–2010 एन्ड्रिया कोसू एवं मैटियो बोर्तोलिनी

जैसा एन्ड्रिया कोसू और मैंने इतालवी समाजशास्त्र 1945 – 2010 : एक बौद्धिक और संस्थागत प्रोफाइल में बहस की है, 1990 के दशक के प्रारम्भ ने विषय के ''ओज पूर्ण'' बुनियादी काल के अन्त को चिन्हित किया। ऐसा कम करिश्माई, अधिक पेशेवर वैज्ञानिक व्यवहार जिसे उत्तम रूप से ''बिना किसी मानकीकरण के सामान्यीकरण'' के विरोधाभासी मिश्रण के रूप में वर्णित किया जा सकता है को स्थान देने से हुआ। विषयों, पद्धति या सैद्धान्तिक फ्रेमवर्क पर वैज्ञानिक और यहाँ तक व्यवहारिक मतैक्य के अभाव ने वैज्ञानिक कार्य के दैनिक व्यवहार और समाजशास्त्रियों एवं उनकी कई प्रकार की जनता – इतालवी एवं विदेशी सहकर्मी, राष्ट्रीय एवं स्थानीय राजनैतिक अभिजन, सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलनों, आर्थिक कर्त्ता और जन संचार के मध्य सम्बन्धों को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, इसने समाजशास्त्रीय समुदाय, इसके पेशेवर और नैतिक मानकों या इसकी संभावनाओं की साझा दृष्टि के विकास को रोका है। विषय ने अपने अतीत, वर्तमान या भविष्य – इतना कि ''युद्ध–पश्चात के समाजशास्त्र का पुनर्जन्म'' या 1968 के छात्र प्रतिरोध (GD 7.3 के इस अंक में चेस्ता और कोसू को देखें) के पुराने मिथक भी स्थापित अकादमिक संस्थाओं में प्रशिक्षित युवा समाजशास्त्रियों को कम समझ आते हैं, के बारे में नये, सशक्त मास्टर वृत्तान्त का निर्माण करने के लिए संघर्ष किया है।

वास्तव में, जैसा वैश्विक संवाद में प्रकाशित कई लेखों ने सुझाव दिया है, विगत 30 वर्षों में समाजशास्त्रीय उपागमों और अनुसंधान शैलियों का बहुलवाद लगभग सभी जगह घटित हुआ है। इटली में, यद्यपि, विषय के विशिष्ट इतिहास ने उत्तर आधुनिक विखण्डन को एक विशिष्ट इतालवी अंदाज दिया है। पिछले 15 वर्षों में, अपने प्रबंधकीय और बाजारी विचार धारा और अकादमिक पेशों के युद्ध–पश्चात

>>

आकलन के साथ उच्च शिक्षा में विश्वव्यापी नवउदारवादी झुकाव ने इटली के कोम्पेन्ती (गुट), 1960 के दशक के अन्त में राजनैतिक दोष लाइन के इर्द गिर्द एकत्रित होने वाले तीन शक्तिशाली अकादमिक समूह – रोमन कैथोलिक, कम्यूनिस्ट और समाजवादी, को कमजोर किया है। उसी समय, युवा विद्वानों को अपने भौगोलिक, बौद्धिक और पेशेवर क्षितिज को व्यापक करने के लिए प्रोत्साहित किया है। ऐसा पहले से अधिक इतालवी समाजशास्त्रीयों द्वारा डिग्री लेने या विदेश में पोस्ट–डोक्टोरल फैलोशिप लेने, सामान्य तौर पर अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में भाग लेने और वैश्विक वैज्ञानिक नेटवर्कों के सक्रिय सदस्य बनने के द्वारा हुआ है। परिणामस्वरूप, कुछ समाज वैज्ञानिक इतालियन को अपनी मुख्य प्रकाशीय भाषा के रूप त्याग कर स्वयं को अस्थिकृत शैक्षणिक/अकादमिक परिपाटी से दूर करते हैं और इस संभावना को कमजोर करते हैं कि विषय के रूप में इतालवी समाजशास्त्र एक अधिक परिभाषित या सहमति जन्य छवि या व्यवहार प्राप्त कर सकता है (GD 7.3 के इस अंक में स्क्वाजोन्नी एवं एकबरितबार देखें)

इन सर्व–महत्वपूर्ण गत्यात्मकता के साथ, इतालवी समाजशास्त्र आज तीन मुख्य चुनौतियों का सामना कर रहा है : राष्ट्र की सांस्कृतिक और बौद्धिक कल्पना में उसका स्थान, समाज विज्ञानों और अधिक व्यापक रूप से नवउदारवादी शैक्षणिक समुदाय के भीतर उसकी भूमिका और उसकी संस्थागत और सहयोगी आधारभूत संरचना।

इतालवी समाजशास्त्र के सामने एक सबसे बड़ी समस्या है राष्ट्रीय सामाजिक कल्पना (GD 7.3 के इस अंक में वायरा एवं मुर्गिया और पोजिया दोनों देखें) में पहचान का अभाव है। पहली पीढ़ी के मुट्ठी भर समाजशास्त्रियों में करिश्माई व्यक्तियों, जिन्हें या तो उच्च स्तरीय राजनेता या लोक बुद्धिजीवी के रूप में ख्याति प्राप्त हुई, के अलावा इतालवी समाज पर समाजशास्त्र पेशे का प्रभाव काफी हल्का रहा है। एक तरफ, इटली के 1968 से 1970 के दशक, (जब त्रेन्तो विश्वविद्यालय के कई पूर्व सदस्य आतंकवादी समूह रेड ब्रिगेड्स में शामिल हो गये और जहां अन्य समाजशास्त्रियों ने नव–वामपंथी संगठनों को नेतृत्व प्रदान किया) की दीर्घकालीन स्मृति समाजशास्त्री की एक कट्टर और गैर जिम्मेदार बुद्धिजीवी की अनवरत छवि को बनाये रखने में योगदान देती है। यह छवि कुछ समाज वैज्ञानिकों के विचारक, ''कायिक बुद्धिजीवी'' या राजनैतिक आंदोलनों ट्रेड यूनियनों या नागरिक समाज संगठनों में सलाहकार के रूप में कार्य करने के वर्तमान निर्णय से मजबूत होती है। दूसरी तरफ, 1980 के दशक के मध्य से समाजशास्त्रियों की अत्यलंकृत की रूप में आलोचना हुई, यहां तक कि उन्हें अक्सर वेपिड़ तुनोलोजी (सर्वज्ञ) के रूप में देखा गया। यद्यपि सहकर्मियों की एक युवा पीढ़ी को लोक बुद्धिजीवियों के रूप में ख्याति मिली–उनमें से इल्वो दियामंती, माअरो मगाती, और जियोवानी से भी जिनकी 2015 की पुस्तक जेन्ट्रीफिकेशन ने तहलका मचा दिया था, हैं – विषय की छवि को नवीकृत करने या सामाजिक प्रक्रियाओं की चर्चा में इसकी वैधता को पुनः स्थापित करने में समय और मेहनत लगेगी।

अकादमिक समाजशास्त्र का प्रारब्ध इटली की उच्च शिक्षण व्यवस्था से बंधा हुआ है। 2004–05 में एक राष्ट्रीय प्रक्रिया ने शैक्षणिक कर्मियों के वैज्ञानिक आउटपुट को एकत्रित कर, उनका विश्लेषण और आकलन करने का प्रयास किया। यद्यपि इसका बहुत कम वास्तविक प्रभाव था, निष्कर्षों ने विकट तस्वीर प्रस्तुत की : समाज विज्ञानों में इतालवी समाजशास्त्र की स्थिति बहुत खराब थी, जिसने प्रकाशित शोध की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए नये प्रयासों को प्रोत्साहित किया। बाद में, नवउदारवादी बर्लुस्कोनी सरकार ने इतालवी उच्च शिक्षा के अतिवादी और काफी विवादित सुधार (कानून 240/2010) लागू किया जिसने 2012 के अंत तक तीव्र अन्तर–वैषयिक एवं अंतर्विषयक झगड़े पैदा किये। ASN-वैज्ञानिक योग्यता की राष्ट्रीय प्रक्रिया – के निष्कर्षों के प्रकाशन ने एक अनूठी भर्ती प्रणाली को लागू किया : आवेदन करने वाले पांच में से केवल एक को ही पूर्ण या एसोसियेट प्रोफेसर के भावी पदों के लिए योग्य माना गया। इसके अलावा, अपने कैरियर को आगे बढ़ाने में सहायक आवश्यक डिग्री प्राप्त करने अधिक अभ्यर्थियों के साथ उत्तरी इतालवी विश्वविद्यालय केन्द्रीय और दक्षिणी से बेहतर स्थिति में थे।

फलस्वरूप, प्रादेशिक एवं उप–वैषयिक असमानताओं पर बहस, तीन अकादमिक कैम्पों की शक्ति और विषय का विखण्डन असामान्य भावुक रूप में आयोजित किया गया। सबसे कड़ी बहस 2010 के कानून में प्रतिष्ठापित मूल्यांकन पर केन्द्रित थी जिसने शोध–गहन कैरियर को गैर–आनुपातिक रूप से पुरस्कृत किया। विदेशी जर्नल में प्रकाशित लेखों और वैश्विक शोध नेटवर्कों की सदस्यता पर सभी को सकारात्मक रेट किया गया जबकि अपने घरेलू संस्थान में शिक्षण और सेवा कार्य को आकलन के लिए उचित नहीं माना गया। औसतन रूप से, विश्ववादी समाजशास्त्री जिन्होंने इटली के समाजशास्त्रीय क्षेत्र से आंशिक या पूर्ण रूप से मुंह फेर लिया था, अपने स्थानीय–अभिविन्यस्त सहकर्मियों से बेहतर स्थिति में थे।

अंत में, 2010 के सुधार पर विवादों का 1983 में सृजित इतालवी समाजशास्त्रीय संघ (AIS) पर गहरा और शायद अनपेक्षित प्रभाव पड़ा। यह संघ तीनों कैम्पों द्वारा शैक्षणिक पदों और शोध फंडिंग के आवंटन को संयुक्त रूप से प्रबुंधित करने के लिए एक समाशोधन गृह के रूप में बना था। धीरे धीरे संघ की प्रतिष्ठा और अपील कम होने लगी एवं ASN के निष्कर्ष प्रकाशित होने के समय में इसके आचरण ने कई अकादमिक समाजशास्त्रियों को संघ से अलग होने के लिये मजबूर किया। चूंकि सदस्यता काफी गिर गई है, संघ अपनी सार्वजनिक/लोक भूमिका और विषय के मुख्य मानक वाहक के रूप में अपील को सशक्त कर खुद को नवीनीकृत करने का प्रयास कर रहा है। उसी समय, आर्थिक समाजशास्त्रीयों, हालांकि वे वैज्ञानिक शोध के आकलन में औसतन रूप से बेहतर स्थिति में थे, ने AIS को छोड़ने का निर्णय लिया जिसने एक नये उप–वैषयिक पेशेवर संघ का निर्माण किया। जनवरी 2017 में, पंजीकृत लगभग 220 पंजीकृत सदस्य – तकरीबन दस में से एक अकादमिक समाजशास्त्री के साथ आर्थिक समाजशास्त्र इतालवी सोसाइटी (SISEC) ने अपनी प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। यह तो समय ही बतायेगा कि क्या यह दुहरा नवीनीकरण फलदायक होगा और क्या यह इतालवी समाजशास्त्र को अपने इतिहास के सबसे अशांत और अप्रत्याशित चरणों में से एक से आगे बढ़ने में मदद करेगा। ■

मेतियो बोरतोलिनी से पत्र व्यवहार हेतु पता
<matteo.bortolini@unipd.it>

> ग्राम्शी, अपने ही देश में एक अजनबी

रिकार्डो एमिलियो चेस्ता, यूरोपीयन यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट, फिसोल, इटली

एन्थोनी ग्राम्शी

समाजविज्ञानों में समकालीन बहस में विवेचनात्मक समाजशास्त्र और मार्क्सवाद आम तौर पर एक ही बक्से में स्थित होते हैं। वास्तव में, उनके सम्बन्ध शायद ही स्पष्ट होते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विषय की पुर्नरचना 'सामाजिक' के अध्ययन के आधिपत्य के संघर्ष – और समाजशास्त्र एवं मार्क्सवाद के मध्य अंतर्निहित संघर्ष के सम्बन्धों का बखूबी चित्रण करती है।

यह कोई संयोग नहीं है कि मैं आधिपत्य की अवधारणा को प्रयोग में ले रहा हूं : इतालवी मार्क्सवादियों की सामाजिक विज्ञानों के प्रति द्वैध वृत्ति को एंटोनियो ग्राम्शी के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। ग्राम्शी की दार्शनिक पृष्ठभूमि से लेकर बुद्धिजीवियों की सामरिक संकल्पना तक और जिस तरह ग्राम्शी के कार्य को इतालवी कम्यूनिस्ट पार्टी ने काम में लिया, कई तत्वों ने ग्राम्शी एवं युद्ध–पश्चात् के इतालवी समाजशास्त्र के बीच दूरी रखने में योगदान दिया है। अंतराष्ट्रीय समाज वैज्ञानिकों द्वारा उनकी व्यापक प्रशंसा के विपरीत, ग्राम्शी 'अपने देश में अजनबी' हैं अर्थात समाज विज्ञान के इतालवी क्षेत्र के अन्तर्गत।

> ग्राम्शी के मार्क्सवाद में प्रच्छन्न आदर्शवाद

अपने सैद्धान्तिक फ्रेमवर्क के निर्माण के दौरान ग्राम्शी ने अपने समय के सर्वश्रेष्ठ लोक बुद्धिजीवी : नियोपोलिटन दार्शनिक बनेडेट्टो क्रोस, जिनका सैद्धान्तिक/वैचारिक एवं राजनीतिक प्रभाव बीसवीं शताब्दी के पहले छमाही में प्रबल था, का सामना किया। असल में, ग्राम्शी की प्रिजन नोटबुक्स में सर्वाधिक उद्धत और चर्चित लेखक न तो मार्क्स, न ही लेनिन हैं बल्कि क्रोस हैं।

आदर्शवादी ऐतिहासिकवाद के समर्थक के रूप में, क्रोस ने "सामाजिक के विज्ञान" के अस्तित्व को ही नकारा। उन्होंने कानून की प्रधानता की पुष्टि करने के लिए उत्कृष्ट ज्ञानमीमांसीय तर्क को प्रयोग में लिया और इस संभावना को निश्चित तौर पर खारिज किया कि समाजशास्त्र वैज्ञानिक विषय हो सकता है। क्रोस के पैरेडाइम की सीमाओं को जानने के बावजूद – मुख्य रूप से मार्क्सवाद को इतिहास के दर्शन के रूप में देखने से इंकार करने से – ग्राम्शी ने इतालवी संस्कृति में आदर्शवादी और आध्यात्मिक आधिपत्य को कम करने के लिए 'क्रोस–विरोधी' का आह्वान किया। उसी समय, प्रिजन नोटबुक्स यद्यपि विवेचनात्मक दृष्टि से, समाज विज्ञान के मुख्य कृत्यों के साथ गंभीरता से भिड़ती है। यह कमोबेश इतालवी समाज और राजनीति के परिशुद्ध अध्ययन के समाज विज्ञान के वादे को मान्यता देती है।

> टुंग्लैती का ग्राम्शी

यह समझने के लिए कि 1950 के दशक में इतालवी बुद्धिजीवियों ने ग्राम्शी के कार्य की प्रच्छन्न–आदर्शवादी व्याख्या को क्यों और कैसे अपनाया, हम केवल उनके लेखन पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते। इसके बजाय, हमें उस संदर्भ पर ध्यान देना होगा जिसमें ग्राम्शी की मुख्य कृतियाँ – जो 1937 में उनकी मृत्यु के समय फासीवादी जेल में बिखरी और स्केच की हुई पड़ी थी – प्रथम बार प्रकाशित हुई। प्रिजन नोटबुक्स उनके मरणोपरांत, ग्राम्शी के पुराने मित्र, कम्यूनिस्ट पार्टी के मुख्य नेता पालमिरो टुग्लैती एवं साम्यवादी पत्रकार फेलिस प्लातोन के साथ तैयार किये गये संस्करण के रूप में आई। इस प्रथम संस्करण ने ग्राम्शी के कार्य को कई भिन्न खण्डों में विभाजित किया जो 1948 (ऐतिहासिक भौतिकवाद और बेनेडेट्टो क्रोस का दर्शन) एवं 1949 (बुद्धिजीवी, अल रिसोद जिमेन्तो एवं मैक्यावली पर नोट्स) के मध्य प्रकाशित हुए। टुग्लैती एवं प्लातोन ने ग्राम्शी को इतालवी सांस्कृतिक परम्परा के मुख्य उत्तराधिकारी के रूप में प्रस्तुत किया। ऐसा उन्होंने एक आदर्श बौद्धिक विरासत जिसमें डे संकटिस, स्पविन्ता, लेबरियोला, क्रोस और अतः में ग्राम्शी थे, का पुनर्निर्माण के माध्यम से किया।
>>

उसी समय, ग्राम्शी के सामूहिक दल/पार्टी निर्माण के विश्लेषण के विशिष्ट ''नव–मैक्यावली'' प्रयोग या जिसे ग्राम्शी ने ''आधुनिक राजकुमार'' कहा था, के द्वारा सांस्कृतिक आधिपत्य जमाने की स्पष्ट रणनीति बनाई गई थी।

मार्क्सवादी दार्शनिक के कार्यों की इस तरह के विशिष्ट गठन का दोहरा लक्ष्य था। प्रथम, ग्राम्शी क्रोस और ऐतिहासिक आदर्शवादी से जुड़ गये और प्रभावशाली बुर्जुआ वर्ग में कम्यूनिस्ट पार्टी की संस्कृति को वैधता प्रदान कर दी। द्वितीय, टुग्लैती के पार्टी के नेता होने एवं श्रमिक वर्ग को नेतृत्व देने में प्रमुख राजनैतिक कर्त्ता के रूप में पार्टी होने के कारण उनकी बौद्धिक विरासत को ऐतिहासिक आंदोलन की नव–मैक्यावली दिशा को समर्थन देने के लिए रूपांतरित करना था। इस रूपांतरण के माध्यम से ग्राम्शी को सामाजिक आंदोलनों के लिए प्रतिनिधित्वपूर्ण लोकतांत्रिक नेतृत्व के पैरोकार के एक प्रगतिशील बुर्जुआ दार्शनिक न कि दलित संस्कृति में रूचि रखने वाला विद्वान और एक ऐतिहासिक आदर्शवादी जो समाज विज्ञानों के मूल्य को नकारता है, के रूप में प्रस्तुत किया गया।

> एक गायब कड़ी

1950 के दशक के दौरान ग्राम्शी के कृत्य वामपंथी बुर्जुआ का निर्माण करने को इच्छुक बुद्धिजीवियों की एक पीढ़ी जो नवजात सामाजिक विज्ञानों पर श्रमिक वर्ग पर वैचारिक रूप से कब्जा करने के लिए अमरीका से आयातित ''टूल ऑफ द बासेस'' का आरोप लगा रही थी, के प्रमुख हथियार बन गये। वस्तुतः, इटली में समाजशास्त्र के एक पैरोकार, उद्यमी एड्रियानो ओलिवेत्ती थी जिन्होंने समाजवादी पार्टी से जुड़े तकनीकी विशेषज्ञों और बुद्धिजीवियों को एकत्रित किया एवं उन्हें अनुदान दिया। इवरिया में अपनी फर्म में ओलिवेत्ती ने ''सामाजिक सम्बन्धों का विभाग'' बनाया जहां युवा विद्वान प्रभावशाली अमरीकी समाजशास्त्रीय कार्यों का अध्ययन कर सकते थे और औद्योगिक सम्बन्धों के अध्ययन में समाजशास्त्रीय उपकरणों को काम में ले सकते थे।

कम्यूनिस्ट बुद्धिजीवी और नेता ओलिवेत्ती के ''समुदाय उद्यम'' प्रोजेक्ट के प्रति संशयी रहे और उन्होंने इसे नियोक्ता द्वारा वर्ग संघर्ष को रोकने के लिए तकनीकी परोपकारवाद के प्रयास के रूप में देखा। सितम्बर 1955 में आधिकारिक जर्नल इल कन्टेम्पोरानियो में प्रकाशित एक लेख में, कम्यूनिस्ट बुद्धिजीवी फेब्रिजियो ओनोफ्री ने ओलिवेत्ती के सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आंदोलन को विचित्र मसीहाबाद के रूप में निंदा की और ओलिवेत्ती को एक तरह का अल्लाह और उनके दाहिने हाथ समाजशास्त्री फ्रेंको फेरोत्ती को ओलिवेत्ती का पैगम्बर मुहम्मद के रूप में वर्णित किया। 1950 के दशक में अधिकृत ग्राम्शी–वाद अनुभवजन्य परीक्षण के अभाव वाली स्थापित सैद्धान्तिक मान्यताओं पर निर्मित इतिहास का आदर्शवादी दर्शन और टुग्लैती के ''प्रगतिशील लोकतंत्र'' के लिए एक मैनुअल, एक रणनीति जो इतालवी गणतंत्र के लोकतांत्रिक संस्थानों के भीतर श्रमिक वर्ग के लिए क्रमिक रियायतें लेने के प्रति निर्देशित थी, दोनों बन गया।

दो घटनाओं के परिणामस्वरूप इतालवी कम्यूनिस्ट पार्टी (PCI) के एक नये महत्वपूर्ण वामपंथी समूह के उभार से ग्राम्शी के वैकल्पिक अध्ययन का मार्ग खुला। 1955 में, फियट कारखाने – श्रमिक वर्ग आंदोलन के राष्ट्रीय केन्द्रों में से एक, के आंतरिक यूनियन चुनावों ने चौंकाने वाले परिणाम दिये : इटली की एक प्रमुख वामपंथी यूनियन CGIL और PCI की सबसे सशक्त कारखाना आधारित सहयोगी ने अपने मतों को लगभग आधा होते देखा। एक वर्ष पश्चात्, बुडापेस्ट में प्रतिरोधों के सोवियत दमन ने अप्रकट शिकायतों को बढ़ा दिया जिसने वामपंथी बुद्धिजीवियों, जिनमें से कई ने पार्टी को छोड़ दिया, के मध्य भारी बहस को पैदा किया।

हालांकि 1950 के दशक के अंत में जब युवा, संलग्न बुद्धिजीवी (जिसमें रेनियेरो पेनजियरी के नेतृत्व में क्वाडरनी रोसी समूह सम्मिलित था) संस्थागत इतालवी मार्क्सवाद को चुनौती देने लगे, वे टुग्लैती की ग्राम्शी की व्याख्या की आलोचना करने के लिए समाजशास्त्रीय शोध के एक आक्रामक/लड़ाका स्वरूप ''इंचिएस्ता ओपेराइया'' (''श्रमिक वर्ग जाँच'') की तरफ मुड़े। लेकिन इस में सिद्धान्तकार की कोई वास्तविक पुनः खोज सम्मिलित नहीं थी; वास्तव में, 1967 में जा कर ही ग्राम्शी इंस्टीटयूट ने शैक्षणिक समाजशास्त्रियों को ग्राम्शी के योगदान का अन्वेषण करने के लिए प्रेरित किया, यद्यपि इस संवाद ने किसी गंभीर वैज्ञानिक प्रोग्राम को प्रारम्भ नहीं किया। और जहां 1968 के विद्रोह ने फ्रेंकफर्ट स्कूल से लेखन कार्य को आयात कर विवेचनात्मक समाजशास्त्र को नवीकृत करने में मदद करी, अधिकांश शैक्षणिक समाजशास्त्रियों ने पेशेवर बनने के प्रयासों के मददेनजर विवेचनात्मक सिद्धान्तों से दूरी बनाई रखी। 1970 के दशक के अंत तक मार्क्सवादी एवं वृहद–समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के संकट के साथ ग्राम्शी दर्शन के इतिहास विज्ञान के एक अन्य विषय/मुददे के रूप में प्रतीत हो रहे थे।

यहां पर यह विरोधाभास स्थित है : इटली में उनके उभार और समेकन के महत्वपूर्ण चरण में, न ही शैक्षणिक और न ही जन समाजशास्त्र ''वास्तविक ग्राम्शी'' से मिल पाये। जहां शेष दुनिया – अमरीका से लेकर लेतिन अमरीका और भारत में ग्राम्शी के सिद्धान्तों ने सांस्कृतिक अध्ययनों और दलित समूह अध्ययनों में, और राजनैतिक अर्थव्यवस्था एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सामाजिक वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण बौद्धिक उपकरण प्रदान किये हैं, इटली में, शैक्षणिक एवं विवेचनात्मक समाजशास्त्रियों द्वारा समान रूप से, उनके योगदान मोटे तौर पर अनदेखा किया गया। यह एक ऐसा पैटर्न था जिसका अर्थ था कि महान सार्डिनियन विचारक ''अपने ही देश में अजनबी'' रह कर वैश्विक बुद्धिजीवी बन गया। ■

रिकार्डो एमिलियो चेस्ता से पत्र व्यवहार हेतु पता <riccardo.chesta@eui.eu>

> दोमुँहा इतालवी समाजशास्त्र, 1945-1965

एन्ड्रिया कोसू, ट्रेन्तो विश्वविद्यालय, इटली

फ्रेंको फेरारोती, इटली में पेशेवर समाजशास्त्र के संस्थापक में से एक

वैज्ञानिक विषयों के लिए, बौद्धिक स्वीकृति और संस्थानीकरण की तरफ अग्रसर मार्ग लगभग हमेशा ही कठिन होता है जिसमें न केवल सीमाओं के बारे में बहस बल्कि जटिल, कभी कभी विशिष्ट, आधारभूत संरचना, जिसके द्वारा विषय अपने आप को स्थापित कर पाता है और आशापूर्वक फलता फूलता है, का निर्माण भी सम्मिलित है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात का इटली, विशेष रूप से समाज विज्ञानों के लिए, कोई अपवाद नहीं था। राजनीति विज्ञान अक्सर एक "फासीवादी" विषय के रूप में देखा जाता था, आंकड़े औपनिवेशिक प्रयासों में इसकी भागीदारी का कलंक दर्शाते हैं। समाज विज्ञानों, विशेष रूप से सबसे कमजोर—समाजशास्त्र की लगातार आलोचनाओं के साथ आदर्शवादी दर्शनशास्त्र शासन कर रहा था।

इतालवी समाजशास्त्र ने एक प्रतिकूल वातावरण जो न सिर्फ शैक्षणिक बैर और कम्यूनिस्ट पार्टी के जैविक बुद्धिजीवियों से राजनैतिक हमलों से परिभाषित था बल्कि इतालवी विश्वविद्यालयों की संस्थागत बाधाओं, जो उभरते विषयों के आला बनने स्थान के प्रयासों को उलझाती है, के मध्य अपने पहले कदम रखे। शीर्ष—पाद, राज्य संचालित नौकरशाहीकरण और स्थानीय पैतृक गतिकी के घातक मिश्रण का अर्थ था कि समाजशास्त्रियों को अपने विषय को काफी हद तक विश्वविद्यालय के बाहर विकसित करना पड़ा। समाजशास्त्रियों ने, यद्यपि कभी कभी उन्होंने अधीनस्थ पदों पर रह कर, शोध केन्द्रों, प्रकाशन गृहों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए विद्यालयों के आधारभूत ढाँचे के निर्माण में मदद की। यह एक ऐसा विन्यास था जिसका 1960 के दशक के बाद, जब समाजशास्त्री अकादमिक पदों पर स्वीकार किये जाने लगे, भी प्रभाव जारी रहा।

इटली में समाजशास्त्र के संस्थाकरण पर चिंतन अक्सर बौद्धिक स्थितियों के इतिहास के आसपास घूमता रहा। जैसा मैतियो बोर्तोलिनी और मैंने इतालवी समाजशास्त्र 1945—2010 में तर्क दिया है, यह समझने के लिए कि युवा विद्वानों का एक समूह—जो अक्सर स्थापित विषयों जहां उन्होंने अध्ययन किया में हाशिये पर रहता है—समाजशास्त्री बन गये और बाद में शैक्षणिक क्षेत्र में प्रवेश

>>

कर गये, गहराई तक जाना होगा। अन्य शब्दों में, इस समूह द्वारा समाजशास्त्र की खोज की क्षेत्रों, सम्बन्धों एवं प्रक्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित कर समाजशास्त्रीय जाँच होनी चाहिए। ऐसा करने से इटली में विषय के पूर्व वृत्तान्तों को विशेषता प्रदान करने वाले एजेंसियों और सुविचारित रणनीतियों पर फोकस बदल जायेगा।

1951 (जब सबसे महत्वपूर्ण जर्नल में से एक क्वाडर्नी दि सोशियोलेजिया फ्रेंको फेरारोती एवं उनके सलाहकार दार्शनिक निकोला एबाग्नानो द्वारा स्थापित किया गया) और 1961 (एक राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के बाद जब समाजशास्त्र की प्रथम तीन पूर्ण चेयर स्थापित हुई) के मध्य के दशक ने विषय के बुनियादी ढाँचे के निर्माण और आज भी देश में जो समाजशास्त्र के मुख्य केन्द्र हैं का सृजन होते देखा। सिंहावलोकन में, डायना पिंटो ने इस युग को लगभग दो बराबर के कालों में विभाजित किया है : यदि 1950–1956 को समाजशास्त्र की खोज से अंकित किया जाता है, काल के उत्तरोत्तर भाग में समाजशास्त्र ने ''सांस्कृतिक केन्द्रीयता'' प्राप्त की। लेकिन शायद ''बहुकेन्द्रीयता'' एक बेहतर रूपक हो सकता था।

यद्यपि इतालवी बौद्धिक क्षेत्र में विश्वविद्यालय एक केन्द्रीय संस्था थी, समाजशास्त्री 1960 के दशक के अंत तक सामूहिक रूप से अकादमिक क्षेत्र की तरफ नहीं मुड़े। इस समय के दौरान बल्बो और उसके सहयोगियों ने समाजशास्त्र की एक ''रूग्ण विज्ञान'' के रूप में पहचान की। उन्होंने उस स्वप्न की असफलता को स्वीकार किया कि समाजशास्त्री देश के आधुनिकीकरण के लिए फील्ड मार्शल का कार्य कर सकते हैं। इस प्रकार समाजशास्त्रियों के पास अकादमिक पद ही एकमात्र व्यवहारिक विकल्प के रूप में बचे। इस बदलाव से पहले मिलान में सेंत्रो नेजियोनेल दि प्रेवेन्जियोन इ डिफेसा सोसियेल जैसे शोध केन्द्रों, बोलोग्ना में इल मुलिनो जैसे सांस्कृतिक संघों और एड्रियानो ओलिवेत्ती जैसे उद्यमी, जिसकी असाधारण उद्यमी दृष्टि ने व्यवहारिक समाज विज्ञान को कारखाने के भीतर और बाहर समुदायों को सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखा, द्वारा स्थापित कम्यूनिता जैसे राजनैतिक आंदोलन के साथ इटली में समाजशास्त्र का बुनियादी ढाँचा मोटे तौर पर अधि–शैक्षणिक था। इन शोध केन्द्रों ने सांस्कृतिक संस्थाओं और अंतराष्ट्रीय निकायों (जैसे फोर्ड फाउंडेशन और यूनेस्को) के साथ स्थायी संपर्क स्थापित किये, जबकि इनाड़ी, कम्यूनिता (फिर से ओलिवेत्ती द्वारा स्थापित) और इल मुलिनो जैसे प्रमुख प्रकाशक समाजशास्त्र अन्य विषयों (विशेष रूप से दर्शनशास्त्र) से कैसे भिन्न है पर बौद्धिक बहस और आनुभाविक विश्लेषण एवं क्षेत्रकार्य के प्रसार दोनों में ही संलग्न थे। उसी समय, कुछ विश्वविद्यालय आधारित संस्थाओं (मिलान, जेनोओ, तुरिन, फ्लोरेंस और पोर्तिसि में) में विद्वानों का ढीला नेटवर्क औद्योगिक सम्बन्धों, आर्थिक समाजशास्त्र, सामुदायिक अध्ययन और चुनावी भूगोल में अधिकांशतः व्यवहारिक शोध में जुटा रहा।

1950 के दशक के अंत तक, इस तरह इतालवी समाजशास्त्र दोमुहाँ विषय था जो वैधता प्राप्त करने के साधन के रूप में सिद्धान्त पर फोकस (सशक्त प्रकार्यवादी झुकाव के साथ) और व्यवहारिक शोध को करने के प्रयासों के मध्य बँटा रहा। परिणाम मिश्रित थे। ''सिद्धान्त'' का अर्थ अक्सर पारसन्स, पर्टन, लजारस्फेल्ड के मताग्रही और आंशिक पाठ का केवल पुर्नउत्पादन था; क्षेत्र कार्य में अक्सर, नवाचार शोध को किसी प्रकार का स्थान दिये बिना, सामान्य सर्वेक्षण और बुनियादी नृवंशविज्ञान सम्मिलित था।

इस संकीर्ण फोकस के बावजूद, हालांकि समाजशास्त्र एक ''साधारण विज्ञान'' बन गया, यह कुछ ऐसा था जिसकी अत्यन्त आवश्यकता थी। समाजशास्त्रियों की पहली पीढ़ी (जिसमें फेरारोती, एलेसेंड्रो पिजोरनो, सबिनो एक्वाविवा, यूजिनियो पेनाती, एचिल आर्दिगो, लुसियानो कवाली, जियार्जो ब्रागा, फिलिपो बरबानो सम्मिलित थे, जिनकी ''लिबेरो डासेन्ते'' की प्रस्थिति उन्हें विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम पढ़ाने की अनुमति देती है) ने अपनी निपुणता और साख को मुख्य विश्वविद्यालयों में विषयगत केन्द्र स्थापित करने में काम में लिया। उस स्थिति से, उन्होंने नये, अधिक विशेषीकृत पीढ़ी, जिनके सदस्यों ने इटली के जन आधारित विश्वविद्यालय व्यवस्था में बदलाव के संदर्भ में, जहां समाजविज्ञान अधिक केन्द्रीय हो गये, विषय के पदों को भर दिया।

अतः 1960 के दशक के दौरान विषय का परिदृश्य नाटकीय रूप से बदल गया। यह स्वप्न कि समाजशास्त्री इटली के आधुनिकीकरण के लिए राजकुमार के सलाहकार के रूप में कार्य करेंगे अब नहीं था; इसके बजाय समाजशास्त्र ने अकादमिक क्षेत्र के भीतर और बाहर एक अधिक स्थिर प्रस्थिति प्राप्त कर ली थी जो समाजशास्त्रीय प्रशिक्षण और पुर्नउत्पादन की मुख्य साइट बन गई थी। डिग्री प्रदान करने वाली प्रथम संस्था 1962 में ट्रेन्तो में स्थापित की गई; इस प्राणहर विकल्प के बाद, समाजशास्त्र के अन्य संकाय राजनैतिक विज्ञान संकाय में समाजशास्त्र में विशेषज्ञता के साथ स्थापित किये गये।

अतः इटली में समाजशास्त्र को वैधता प्रदान करने के बुजदिल प्रयासों के कुछ बीस वर्षों बाद, समाजशास्त्र का शैक्षणिकरण पूरे जोर से होने लगा। लंबे समय तक, समाजशास्त्र एक ऐसा विषय था जिसका क्षेत्र और आदतें अकादमिक क्षेत्र की स्वीकृति के साथ जुड़ी बौद्धिक प्रतिष्ठा से अधिक शोध की सामान्य मांग से आकारित हुई। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि विश्वविद्यालय कमरों से यह लंबे निर्वासन के व्यापक परिणाम हैं जो न सिर्फ समाजशास्त्रियों के नजरिये को आकारित करते हैं बल्कि पसंदीदा शोध के प्रकार के साथ मुख्य हस्तियों के सैद्धान्तिक अभिमुखन को भी आकारित करते हैं।

1960 के दशक के अंत में (और अधिक जोर से 1970 के दशक में) ही इतालवी समाजशास्त्र ने सैद्धान्तिक, आनुभाविक और पद्धतिशास्त्रीय विशेषज्ञता की तरफ निर्णायक कदम उठाये। ■

एन्ड्रिया कोसू से पत्र व्यवहार हेतु पता
<andrea.cossu@unitn.it>

> इतालवी समाजशास्त्र का अंतर्राष्ट्रीयकरण,

1970 के दशक से 2010 के दशक तक

फ्लेमिनियो स्क्वाज्जोनी और **अलीअकबर अकबरितबार,** ब्रेशिया विश्वविद्यालय, इटली

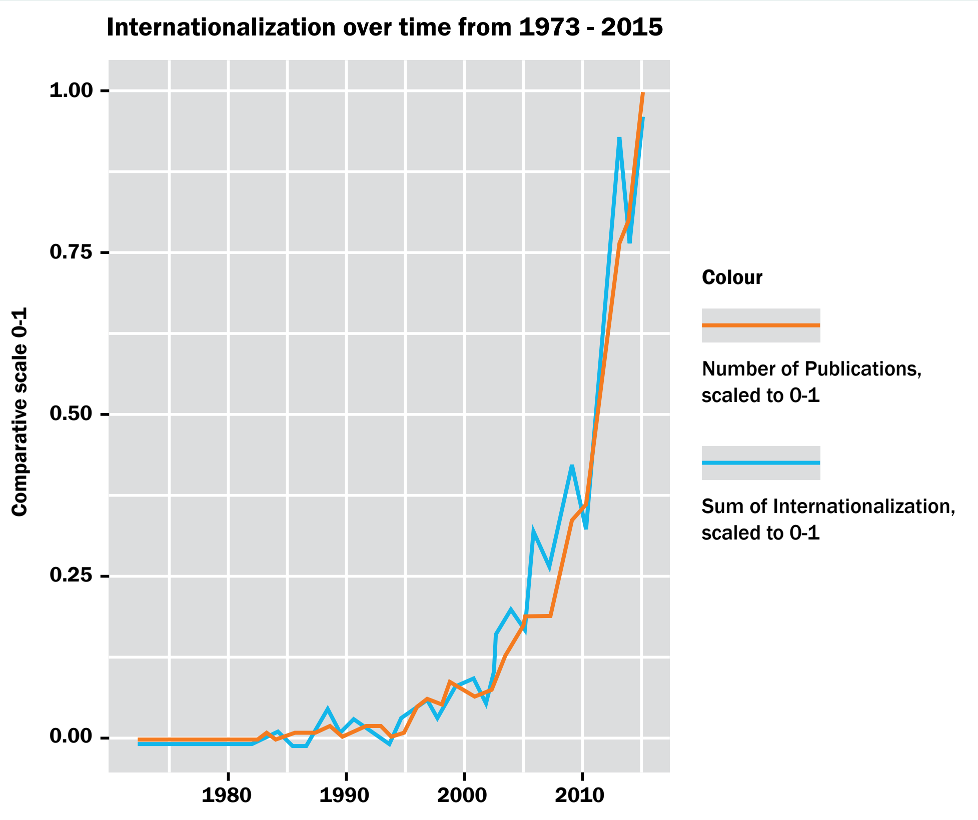

इतालवी समाजशास्त्र का अंतर्राष्ट्रीयकरण, 1973–2015

इतालवी समाजशास्त्री इटली के विभिन्न भागों में स्थित शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों की व्यापक श्रृंखला में कार्य करते हैं। शीर्ष–पाद नियम, सहवर्ती और परस्पर विरोधी ''पैराडिग्मेटिक'' स्कूलों एवं स्थानीय ''गुटों'' के एक जटिल मिश्रण से विकसित भर्ती और पदोन्नति की स्थापित प्रणालियों ने समाजशास्त्रियों को अपने अकादमिक प्रभाव को विस्तृत करने एवं कई संस्थाओं में पद प्राप्त करने की अनुमति दी है। उदाहरण के लिए, इटली के विश्वविद्यालयों में, समाजशास्त्र के शिक्षकों की संख्या अर्थशास्त्र के शिक्षकों के बराबर है (लगभग 1000 पूर्णकालिक, एसोसियेट एवं एसिस्टेंट प्रोफेसर) हालांकि यह हमारे समुदाय के सफल उद्विकास को दिखाता है, यह अस्पष्ट है कि क्या इन प्रणालियों ने सचमुच उत्कृष्ट शोध को प्रोत्साहित किया है या उसे जोखिम में डाला है।

इतालवी समाजशास्त्रियों के प्रकाशनों के संबंध में मात्रात्मक अंतदृष्टि विकसित करने हेतु, हमने MIUR (विश्वविद्यालय एवं शोध मंत्रालय, इटली) वेबसाइट से सभी 1227 इतालवी समाजशास्त्रियों (2016 में नामांकित पोस्ट–डॉक सहित) के नाम लिए और फिर स्कोपस डाटा सेट, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, कांफ्रेस कार्यवाही, मोनोग्राफ एवं पुस्तक अध्याय के साथ सबसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय जर्नल भी सम्मिलित है, में खोज की।

हमने पाया कि 63.8% इतालवी समाजशास्त्रियों से कम से कम 1 प्रकाशन स्कोपस में अनुक्रमित है। इसका अर्थ है कि इटली में तीन में से एक समाजशास्त्री के मान्यता प्राप्त अंतराष्ट्रीय जर्नल, कांफ्रेस कार्यवाही, पुस्तक श्रृंखला या इटली के सबसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय जर्नल में एक भी रिकार्ड नहीं है।

कुछ इतालवी समाजशास्त्रियों के नाम डाटा सेट में अक्सर दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, पाँच व्यक्तियों ने 5 से अधिक अनुक्रमित लेख प्रकाशित किये हैं। दूसरी तरफ, करीबन 20% (249 समाजशास्त्री) ने अपने पूरे पेशेवर जीवन में केवल एक लेख का प्रकाशन किया है। यदि हम प्रकाशनों के प्रभाव पर गौर करें, हमने पाया कि 52.4% (3515 प्रकाशित लेखों में से 1840) का इस डाटा में कोई उद्धरण दिखाई नहीं देते हैं।

>>

दिलचस्प बात है कि डाटा ने भौगोलिक विभाजन का सुझाव दिया। उत्तरी (45.5%) और केन्द्रीय (27.2%) विश्वविद्यालयों में कार्यरत समाजशास्त्रियों ने दक्षिणी विश्वविद्यालय में कार्यरत की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक प्रकाशन किया। यह या तो स्वयं चयन पूर्वाग्रह या नकारात्मक संदर्भ प्रभाव का सुझाव देता है। संभवतः यह भौगोलिक क्षेत्रों में असमान सामाजिक–आर्थिक विकास को भी दर्शाता है। हालांकि, विश्वविद्यालय भर्ती प्रक्रिया का अधिक विस्तार से विश्लेषण, जिसके लिए MIUR डाटा बेस के माध्यम से भर्ती समितियों और उम्मीदवारों के पुनः गठन की आवश्यकता होगी, खुलासा कर सकेगा कि क्या यह पूर्वाग्रह स्वयं–चुनाव और समलैंगिकता की वजह से अधिक है या संदर्भ प्रभाव से।

इतालवी अकादमिक क्षेत्र मे पर्यवेक्षक शायद इस निष्कर्ष पर आश्चर्यचकित न हो, हमें समय श्रंखला को सम्मिलित करने पर अन्य मजेदार परिणाम मिलें। हमने अंतराष्ट्रीय सह–लेखन पर गौर किया जिसने यह सुझाया कि समाजशास्त्री अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में अधिक सक्रिय हैं और अंतराष्ट्रीय शोध मानकों से अधिकपरिचित हैं। प्रत्येक व्यक्ति के सह–लेखकों की कुल संख्या के अनुपात में गैर–इतालवी सह–लेखकों की संख्या को गिनने एवं डाटा को समय में स्केल करने के पश्चात हमने पाया कि हाल के वर्षों में अंतराष्ट्रीय सहकार्य की दर उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है, ठीक वैसे ही जैसे प्रकाशनों की संख्या। ये पिछले दस वर्षों में अंतराष्ट्रीय सह–कार्य में 50% से अधिक वृद्धि के साथ ये रूझान काफी समान हैं। (चित्र देखें)

यद्यपि आगे के विश्लेषण के लिए हमें करणीय कारकों को व्यवस्थित रूप से देखना होगा, यह रूझान संभवतः ANVUR (विश्वविद्यालय और शोध व्यवस्था के मूल्यांकन के लिए इतालवी राष्ट्रीय एजेंसी) राष्ट्रीय शोध आकलन, जो 2010 में स्थापित हुआ और जिसने 2004 से प्रकाशित समाजशास्त्रीय शोध का मूल्यांकन किया, के कारण था। यद्यपि वैज्ञानिकों को अपनी प्रकाशन रणनीतियों से सामंजस्य करने में समय लगता है, कई समाजशास्त्री जो अंतराष्ट्रीय जर्नल से अधिक परिचित नहीं थे, को शायद सुस्थापित आउटलेट में प्रकाशन के महत्व का पता चला। वैकल्पिक रूप से, अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन करने वाले समाजशास्त्रियों ने शायद प्रारंभिक निवेश का लाभ उठाने के लिए अंतराष्ट्रीय प्रकाशनों में और अधिक निवेश करने का निर्णय लिया हो।

हम यह सुझाव नहीं देना चाहते कि संस्थानिक दबाव के सरल डार्विनियन प्रभाव हो सकते हैं, जिसमें वैज्ञानिक केवल अपनी दक्षता में वृद्धि लाने के लिए अनुकूलन करते हैं। हालांकि, राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर धन के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा और विश्वविद्यालय एवं विभागीय उत्पादकता पर बढ़ते ध्यान ने अपनी अकादमिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करने के प्रयोजन से, अंतराष्ट्रीयकरण में वृद्धि और प्रतिष्ठित अंतराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशन के महत्व को प्रोत्साहित किया है। संक्षिप्त में, हम कह सकते हैं "Eppur si muove" – ''और फिर भी यह चलता है''। ■

फ्लेमिनियो स्कवाज्जोनी से पत्र व्यवहार हेतु पता <flaminio.squazzoni@unibs.it>

> इतालवी समाजशास्त्र में लैंगिक स्टिरियोटाइप

एनालिसा मुर्गिया, लीड्स विश्वविद्यालय बिजनेस स्कूल, यू.के. एवं **बारबरा पोगिया,** ट्रेन्टो विश्वविद्यालय, इटली

ट्रेंटो छात्र विद्रोह, 1968

लैंगिक अध्ययन के साथ इतालवी समाजशास्त्र का सम्बन्ध काफी जटिल है, क्योंकि यह इतालवी अकादमिक संदर्भ और इटली में नारीवादी आंदोलन के विकास को विशेषता प्रदान करने वाली प्रघटनाओं और घटनाओं की श्रृंखला के साथ जुड़ा हुआ है।

लैंगिक परिप्रेक्ष्य इटली की समाजशास्त्रीय बहस में 1970 के दशक के अंत में प्रवेश हुए। इसके लिए कुछ अग्रणी महिला समाजशास्त्रियों उत्तरदायी थीं। अन्य देशों की तरह, जेण्डर पर सैद्धान्तिक चिंतन इटली में सर्वप्रथम अकादमिक क्षेत्र के बाहर

>>

ट्रेंटों नारीवादियों की 1968 में बैठक

उभरे। वे महिलाओं के समान अधिकार और गर्भपात एवं तलाक जैसे मुद्दों के इर्दगिर्द राजनैतिक सक्रियतावाद से मजबूती से जुड़े थे। हालांकि राजनैतिक सक्रियतावाद से इस करीबी संपर्क ने अकादमिक व्यवस्था जो अपने आप को राजनैतिक सम्बद्धताओं से स्वतंत्र के रूप में प्रस्तुत करने पर तत्पर थी और समाजशास्त्र, राजनैतिक आतंकवाद एवं आदर्शवादी लक्ष्यों के आरोपों का सामना करने की कोशिश करता एक विषय, में लैंगिक अध्ययनों के संस्थानीकरण को बाधित किया।

लेकिन इतालवी समाज काफी लंबे समय से और अभी भी पारंपरिक लैंगिक व्यवस्था, जो आज भी स्पष्ट रूप से विश्वविद्यालय व्यवस्था में दिखाई देती है, से वर्णित होता है। वैज्ञानिक पेशों में, विशेष कर हठी ''कैंची प्रभाव'' में व्यापक लैंगिक अन्तर देखा जा सकता है : महिला पूर्व स्नातक एवं स्नातक छात्राओं की संख्या पुरुषों से अधिक है और पुरुषों की तुलना में अधिक महिलाएँ पी. एच. डी. एवं पोस्ट–डॉक हैं, लेकिन महिला उपस्थिति अकादमिक पेशे में पारगमन के समय विशिष्ट रूप से गिर जाती है। 2015 में राजनीति एवं समाज विज्ञानों में, पूर्णकालिक प्रोफेसरों में केवल 26%, एसोसियेट प्रोफेसर में 39.3% और एसिस्टेंट प्रोफेसर में 46.7% ही महिलाएँ थी (विश्वविद्यालय शिक्षा एवं शोध मंत्रालय 2016)। वैज्ञानिक जर्नल के बोर्ड, विशेषकर उच्च रैंकिंग प्राप्त, पर कुछ ही महिलाएं कार्यरत होती हैं।

इसके अलावा, इटली के अकादमिक पाठ्यक्रम का कठोर ढाँचा जो केन्द्रीकृत मंत्रकालिक पाठ्यक्रम से सम्बद्ध सीमित आधिकारिक पाठ्यक्रम प्रदान करता है, उच्च शिक्षा में लैंगिक अध्ययन के हाशियेकरण में योगदान देता है। नये विषयों को प्रारंभ करना, विशेष रूप से यदि उन्हें पूर्ण वैधता प्राप्त न हो – जैसा कि लैंगिक अध्ययन के मामले में हुआ – या फिर इनके समर्थक कनिष्ठ या हाशिये वाले अकादमिक पदों पर आसीन हो, काफी कठिन है।

इसी समय, अकादमिक क्षेत्र में लैंगिक अध्ययन का प्रवेश नारीवादी आंदोलन स्वयं के भीतर बहस से भी बाधित हुआ। विशेष रूप से भिन्नता के सिद्धान्त, जिसने इटली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ने स्व–चेतना और अलगाववाद के दावों का समर्थन किया और अकादमिक एवं पितृसत्तात्मक शक्ति के गढ़ के रूप में माने जाने वाले विश्वविद्यालयों के प्रति अविश्वास पैदा किया। इसके अलावा, जैसा साराकोनो उल्लेखित करते हैं, अकादमिक पाठ्यक्रम को प्रभावित करने की इच्छा रखने वाली इटली के नारीवादी विद्वानों ने अपनाई जाने वाली संस्थानिक रणनीतियों पर लंबे समय तक बहस की है : क्या उन्हें महिला एवं लैंगिक अध्ययन विशिष्ट पाठ्यक्रम को प्रारंभ करना चाहिए, या उन्हें लैंगिक परिप्रेक्ष्य को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करना चाहिए? इतालवी विश्वविद्यालय व्यवस्था की संस्थागत कठोरता को देखते हुए, अधिकांश ने मुख्य धारा में लाने के विकल्प का चयन करते हुए नियमित शिक्षण विषयों में महिलाओं और फिर जेण्डर पर ध्यान केन्द्रित करना प्रारंभ किया। उन्होंने पहले छात्रों को स्थापित पाठ्यक्रम के साथ सेमीनार, नवीन पहल और कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया और अंततः लैंगिक शोध केन्द्रों का निर्माण किया।

1980 के दशक के उत्तरार्ध में जाकर ही लैंगिक अध्ययनों ने पूर्ण रूप से मान्यता प्राप्त संस्थागत प्रस्थिति के लिए लड़ना प्रारंभ किया। यह संघर्ष 21वीं शताब्दी तक जारी रहा। समाजशास्त्र में, संस्थागत प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम 2012 में, इतालवी समाजशास्त्र संघ के भीतर एक विशिष्ट खण्ड के बनने से आया।

कई दशकों से, इटली का लैंगिक अध्ययन धीरे धीरे विस्तारित हुआ है–लेकिन यह वृद्धि काफी हद तक खण्डित और अव्यवस्थित रही है। आज, इतालवी अकादमिक समुदाय में लैंगिक अध्ययन की उपस्थिति अभी भी विशिष्ट सेटिंग्स तक सीमित है : लैंगिक भिन्नता पर शिक्षण एवं शोध की मान्यता अक्सर वैयक्तिक महिला विद्वानों एवं उनसे सम्बन्धित संस्था एवं वैज्ञानिक समुदायों में अर्जित मान्यता से जुड़ी है। इसके अलावा, लैंगिक अध्ययन में स्नातक एवं स्नातकोत्तर प्रशिक्षण के अवसर अभी भी काफी सीमित हैं। एक सर्वे के अनुसार, 2011–12 में सभी स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में से केवल 57 पाठ्यक्रमों–संभावित मुख्य विषयों के रूप में पेश किये गये सभी पाठ्यक्रमों का एक सूक्ष्म अनुपात – ने जेण्डर पर फोकस किया। तिंग केन्द्रित पाठ्यक्रमों में से एक–चौथाई समाजशास्त्रीय क्षेत्र में थे; लैंगिक अध्ययन में विशेष प्रकार का कोई भी पाठ्यक्रम नहीं था। लैंगिक अध्ययन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी काफी सीमित थे : बारह विशिष्ट, छः स्नातकोत्तर और चार डोक्टोरल पाठ्यक्रम। हाल ही के वर्षों में, हालिया मित्तव्यत्तता नीतियों एवं उसके परिणामस्वरूप वित्त पोषण में कटौती और चूंकि लैंगिक परिप्रेक्ष्य अकादमिक जगत् में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए अभी भी संघर्षरत हैं, जेण्डर पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने एवं उनका विस्तार करने के प्रयासों को झटका लगा है। यह परिस्थिति राजनैतिक पूर्वाग्रहों के निरंतर आरोपों और लैंगिक अध्ययन के वैज्ञानिक आधार को अस्वीकार करने की माँग के लिए रूढ़िवादी कैथोलिक संघों एवं आंदोलनों के व्यापक रूप से चर्चित अभियान से भी बिगड़ी है। यह सब लैंगिक अध्ययन शोध की मान्यता और प्रसार को सीमित कर शोधकर्त्ताओं के हाशियेकरण को बढ़ाता है।

समाज विज्ञान एवं उसके अलावा कई विषयों में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद, इटली में लैंगिक अध्ययन आज, जिसे डी कोरी ''पहचानवादी अप्रायशितता की प्रोफाइल'' कहते हैं, से वर्णित है। समाजशास्त्र में भी, संस्थागत पाठ्यक्रमों में लैंगिक अध्ययनों की व्यवस्थित और मान्यता प्राप्त उपस्थिति का अभाव है। यह पैटर्न इतालवी विश्वविद्यालय पेशे के पथ में निरंतर और विशिष्ट लैंगिक असंतुलन के साथ जुड़ा है। ■

एनालिसा मुर्गिया से पत्र व्यवहार हेतु पता <a.murgia@leeds.ac.uk>
बारबरा पोगिया से पत्र व्यवहार हेतु पता <barbara.poggio@unitn.it>

> एक प्रभावी विषय :

इतालवी अकादमिक जगत में समाजशास्त्र

मैसिमिलियनो वैरा, पाविया विश्वविद्यालय, इटली

इतालवी विश्वविद्यालय में लंबे समय से विवादास्पद रहे समाजशास्त्र विषय को एक वैज्ञानिक और शैक्षणिक विषय के रूप में हाल ही में मान्यता प्राप्त हुई है। देर से मान्यता मिलने के कारण अकादमिक क्षेत्र के भीतर और सामाजिक स्तर पर इसकी मान्यता और संस्थागतता को अभी पूर्णतः स्थापित नहीं किया जा सकता है। परिणामस्वरूप आज भी समाजशास्त्र अकादमिक क्षेत्र में एक प्रभावी स्थान पर है। बोर्दियो के परिप्रेक्ष्य से कार्य करते हुए इस निबंध/लेख में 2000 के दशक में विषय की स्थिति और प्रस्थिति के अन्य पक्षों में बदलाव आने से पहले के विषय की स्थिति का वर्णन किया गया है, इसमें पदावधि शिक्षाविदों, अध्ययन पाठ्यक्रमों एवं विभागों की संख्या के बारे में अधिकारिक आंकड़ों का प्रयोग करते हुए समाजशास्त्र की अपेक्षाकृत निम्न स्तर की संस्थागतता और इतालवी अकादमिक क्षेत्र के भीतर इसकी सीमित शक्ति के संकेत प्रस्तुत किए गए हैं।

समाजशास्त्र को एक मिश्रित विषय माना जा सकता है, जो सॉफ्ट विज्ञानों से संबंधित है लेकिन यह शुद्ध और व्यावहारिक अनुसंधान के मध्य की सीमा पर स्थित है। सैद्धांतिक, ज्ञानमीमांसीय और सत्तामूलक आधारों पर प्रतिक्रिया समाजशास्त्र को दर्शनशास्त्र, शुद्ध विज्ञान के नजदीक लाती है जबकि समाजशास्त्रीय अंवेषण का आनुभविक आयाम व्यावहारिक ज्ञान को उत्पन्न करता है जो विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में विभिनन प्रयोजनों के लिए उपयोगी होता है। हालांकि समाजशास्त्र की तरह अन्य विषयों (जैसे अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान या भौतिक विज्ञान) में भी मिश्रित चरित्र देखा जा सकता है अधिकांश विषय व्यावहारिक या शुद्ध विज्ञानों की ओर उन्मुख होते हैं तथा इन विषयों को अक्सर सैद्धांतिक और प्रायोगिक/व्यावहारिक ज्ञान के उत्पादन के बीच एक स्पष्ट और अधिक संस्थागत आंतरिक अंतर के रूप में देखा जाता है।

इस अर्थ में समाजशास्त्र कुछ हद तक अकादमिक क्षेत्र की सीमा पर स्थित है। अपनी हालिया और अभी तक अधूरी संस्थागतता तथा अपनी मिश्रित प्रकृति की विशेषताओं को देखते हुए समाजशास्त्र एक अनिश्चित वैज्ञानिक ''पहचान'' रखता है जो अन्य अकादमिक विषयों के मुकाबले सीमित है और जिसे सार्वजनिक बहस में अप्रासंगिक माना जाता है।

अकादमिक जगत और समाज दोनों में समाजशास्त्र की यह कमजोर स्थिति विषय की शक्ति को कमजोर करती है—राष्ट्रीय आंकड़ों में विषय में संस्थागतता की कमी, अकादमिक क्षेत्र में इसकी सीमांत स्थिति और फलस्वरूप इसकी सीमित शक्ति का पता चलता है।

शुरूआती दौर में पूर्ण इतालवी विश्वविद्यालयी प्रणाली में लगभग 900 विभागों में (जिसमें 97 सार्वजनिक, निजी और ''आभासी'' संस्थाएं सम्मिलित हैं) से वर्तमान में केवल पांच विभागों में समाजशास्त्र विषय है—अर्थात् ऐसे विभाग जिसमें नाम में अधिकारिक रूप से समाजशास्त्र शामिल है और जहां अधिकांश स्टॉफ के सदस्य समाजशास्त्री हैं। वर्ष 2012 में (अंतिम वर्ष, जिसका डाटा उपलब्ध है) 2,687 स्नातक अध्ययन पाठ्यक्रमों में से केवल 18 समाजशास्त्र में थे जो 16 संस्थानों द्वारा संचालित होते थे तथा 18 संस्थाओं द्वारा संचालित 2,087 पाठ्यक्रमों में से 22 स्नातक के पाठ्यक्रम थे। वर्ष 2016 में सभी विषयों में कुल 913 पीएचडी कार्यक्रमों में से समाजशास्त्र में 10 से कम डॉक्टरेट कार्यक्रम थे।

यद्यपि ये आंकड़े विषय की सीमांत स्थिति को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं परंतु अन्य विषयों की तुलना में पदावधि अकादमिक कर्मचारियों के आंकड़े अधिक स्पष्ट हैं। नीचे दी गई तालिका 2000 के दशक के दौरान की गई समग्र तुलना का सार प्रस्तुत करती है। 6 तुलनात्मक विषय 2015 में इतालवी विश्वविद्यालय में कुल अकादमिक पदावधि स्थितियों (पदों) के लगभग 60% का प्रतिनिधित्व करते हैं। आंकड़े बताते हैं कि समाजशास्त्र किस प्रकार अधिक व्यावहारिक विषयों (जैसे इंजीनियरिंग/वास्तुकला, अर्थशास्त्र/सांख्यिकी, कानून), ''अधिक शुद्ध'' विषयों (जैसे कला और गणित) और यहां तक कि मनोविज्ञान, जो एक समान हाल के अकादमिक इतिहास के साथ, कुछ हद तक, एक तुलनात्मक मिरित प्रकृति का है, की तुलना में संख्यात्मक दृष्टि से हाशिये पर है।

एक शैक्षणिक क्षेत्र के रूप में समाजशास्त्र एक प्रकार के विखण्डन से ग्रस्त है जिसे एक दोहरे विभाजन के रूप में देखा जा सकता है। सर्वप्रथम, यह विभिन्न प्रकार के विभागों (जैसे राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, कानून, चिकित्सा, इंजीनियरिंग/वास्तुकला, मानविकी) में व्यापक रूप से फैला हुआ है। समाजशास्त्र अक्सर अन्य

> >

विषय और वर्ष के आधार पर पदावधि (स्थायी) संकाय की संख्या

	इंजीनियरिंग वास्तुकला	कला	अर्थशास्त्र सांख्यिकी	कानून	गणित	मनोविज्ञान	समाजशास्त्र
2001	6241	1769	3794	3957	2494	872	*685*
2005	8738	1867	4406	4612	2575	1086	*817*
2010	8608	1670	4647	4765	2443	1239	*933*
2015	7802	1382	4309	4328	2171	1238	*906*

केन्द्रीय विषयों के वर्चस्व के कारण गौर विषय के रूप में सहायक की भूमिका निभाता है। यद्यपि कभी—कभी ऐसा अन्य विषयों के साथ भी होता है। (उदाहरण के लिए गणित अर्थशास्त्र, इंजीनियरिंग/वास्तुकला, मेडिसिन विभाग का हिस्सा हो सकता है, मनोविज्ञान या कानून राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र या अर्थशास्त्र के विभागों का हिस्सा हो सकते हैं। इन विषयों पर समाजशास्त्र से अधिक ध्यान दिया गया है। उदाहरण के लिए इटली में समाजशास्त्र के 5 विभागों की तुलना में कला के 10 विभाग, मनोविज्ञान के 18, कानून के 20, गणित के 35, अर्थशास्त्र के 56, इंजीनियरिंग/वास्तुकला के 137 (एक विषय जो तीन विशेष संस्थानों/पालिटेक्निक में भी स्थित है) विभाग है।

इसी तरह, समाजशास्त्र भी विभिन्न घटकों (शिविरों) में आंतरिक रूप से विभाजित होता है जो ज्ञानमीमांसीय पक्षों के बजाय ''राजनीतिक'' आधारों पर तीन शैक्षणिक/अकादमिक समूहों में विभाजित है। इसने इतालवी समाजशास्त्र अकादमी के प्रति समग्र रूप से और अन्य विषयों के साथ अपने संबंधों के प्रति एक एकीकृत दृष्टिकोण विकसित करने से काफी हद तक रोका गया है और अब भी रोका जाता है।

अंततः समाजशास्त्रीय शैक्षणिक समुदाय पेशेवर, समाजशास्त्रियों के लिए चिकित्सा, कानून, इंजीनियरिंग/वास्तुकला, मनोविज्ञान और कुछ हद तक अर्थशास्त्र की भाँति मान्यता प्राप्त करने की प्रणाली विकसित करने में अभी भी सक्षम नहीं हुआ है। इसका दोहरा प्रभाव पड़ा है। सर्वप्रथम, यह समाजशास्त्र को श्रम बाजार की पेशेवर इकाई के रूप में कुछ कमजोर स्थिति में प्रस्तुत करता है : समाजशास्त्र में स्नातक छात्रों को निश्चित कौशल और ज्ञान से युक्त पेशेवर की श्रेणी में नहीं रखा जाता (अक्सर यह कहा जाता है कि एक समाजशास्त्री आधा तीतर, आधा बटेर होता है अर्थात् बेमेल चीजों का सम्मिश्रण माना जाता है)। और दूसरा, समाजशास्त्र सापेक्षिक रूप से अकादमिक क्षेत्र में एक कमजोर खिलाड़ी है : तथ्य यह है कि यह विषय ''पेशेवरों'' को प्रशिक्षित करने का दावा नहीं करता है, स्पष्ट शब्दों में यही कारण है जो अकादमिक क्षेत्र में इस विषय की कमजोर/सीमांत स्थिति को बनाएं रखता है।

साथ ही ये संरचनात्मक स्थितियां और गतिशीलताएं समाजशास्त्र की प्रभुत्वशाली स्थिति के बारे में कम से कम एक प्रभावात्मक समझ प्रदान करती हैं। प्रत्यक्ष रूप से, वैज्ञानिक, अकादमिक या सामाजिक—आर्थिक पूंजी के अभाव से जूझते इस विषय को इटली के अकादमिक क्षेत्र के सभी तीन आयामों/ध्रुवों—जैसे वैज्ञानिक आयाम, अकादमिक शक्ति का आयाम एवं आर्थिक—सामाजिक मान्यता का सांसारिक आयाम — से हटा दिया गया है। सभी तीन आयामों में समाजशास्त्र की अपेक्षा दुर्लभ स्थिति का मतलब है कि अनुशासन प्रतीकात्मक और भौतिक संसाधनों को प्राप्त करने के सीमित अवसरों से सम्बद्ध है। यह स्थिति अनुशासन के संस्थागत इतिहास, विज्ञान के रूप में इसकी अकादमिक व सामाजिक रूप से अनिश्चित स्थिति, दोहरा विभाजन और पेशेवर के रूप में मान्यता के अभाव का परिणाम है, जिसने इतालवी समाजशास्त्र को अकादमिक जगत में अधीनस्थ और परिधीय विषय के रूप में पदानुक्रम में निचले स्तर पर स्थानान्तरित कर दिया है। ■

मैसिमिलियनो वैरा से पत्र व्यवहार हेतु पता <massimiliano.vaira@unipv.it>

> वैश्विक युग का अंत?

मार्टिन एल्ब्रो के साथ एक साक्षात्कार

मार्टिन अल्ब्रो

प्रसिद्ध ब्रिटिश समाजशास्त्री **मार्टिन एल्ब्रो** ने मैक्स वेबर के एक शोधार्थी और व्यापक रूप से पढ़े गए मोनोग्राफ नौकरशाही (1970) के लेखक के रूप में अपनी एक प्रारंभिक पहचान बनायी। वैश्वीकरण के प्रारंभिक सिद्धांतकार के रूप में उन्होंने 'द ग्लोबल एज : स्टेट एंड सोसायटी बियांड मार्डनिटी (1996) के प्रकाशन में अग्रणी भूमिका निभाई। उनकी अन्य पुस्तकों में 'मैक्स वेबर्स कंस्ट्रक्शन ऑफ सोशल थियरी' (1990) एवं 'डू आग्रेनाईजेशंस हेव्स फीलिंग्स?' (1997) सम्मिलित हैं। शुरूआती दौर में उन्होंने महान नॉरबर्ट एलियास से प्रशिक्षण प्राप्त किया और फिर 1973 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने दुनिया भर के विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। वे 1985–7 तक ब्रिटिश सोसायटी एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे तथा ISA (आई एस ए) के जर्नल 'इंटरनेशनल सोशियोलॉजी' (1984–90) के संस्थापक संपादक रहे। वे वेल्स विश्वविद्यालय में अवकाश प्राप्त (एमेरिटस) प्रोफेसर तथा समाज विज्ञान अकादमी (यू के) के एक सदस्य हैं।

प्रोफेसर एल्ब्रो ने यह साक्षात्कार बुखारेस्ट विश्वविद्यालय, रोमानिया में समाजशास्त्र एवं सोशल वर्क (समाज कार्य) संकाय में बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के शोध संस्थान (ICUB) के समाज विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित एक व्याख्यान के अवसर पर दिया। साक्षात्कर्त्ता राइसा–गैब्रिएला जेमफिर्सक एवं डायना–अलेक्जेंड्रा डमिटेरेस्कू दोनों बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र संकाय के शोध छात्र हैं।

आर जी जेड : आप वैश्वीकरण के समाजशास्त्र में अग्रणी हैं। यह कैसे हुआ?

एम ए : सही है, मुझे लगता है कि वैश्वीकरण ऐसा विषय था जिस पर मैंने अपेक्षाकृत देर से ध्यान दिया। इतिहास में डिग्री प्राप्त करने के बाद समाजशास्त्र में मेरा करियर शुरू हुआ। इसके बाद मैं लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स चला गया, वहां जाकर समाजशास्त्र का अध्ययन शुरू किया और फिर 1961 में शिक्षण कार्य शुरू कर दिया–उस समय में मैक्स वेबर पर अपना शोध प्रबंध लिख रहा था। शोध प्रबंध पूरा करने में बहुत समय लगा क्योंकि मेरे पास शिक्षण कार्य की जिम्मेदारियां भी थी–और मेरी रूचि विविध थीं। अंततः मैंने संगठनों पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया। मेरी पहली पुस्तक नौकरशाही पर थी जो 1970 में प्रकाशित हुई थी।

आर जी जेड : और जिसके आठ संस्करण प्रकाशित हुए।

एम ए : हां, यह अत्यधिक सफल हुई। मुझे नहीं पता क्यों, यह सिर्फ एक छोटी से पुस्तक थी परंतु छात्रों ने इसे बहुत उपयोगी पाया और यही वजह थी जिसके लिए मैं वर्षों तक जाना गया। एक प्रोफेसर बनकर मैंने स्वयं को एक विशिष्ट अकादमिक करियर में पाया और जब मैं एक प्रोफेसर था तब मैं ब्रिटिश समाजशास्त्र संघ (ब्रिटिश सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन) का अध्यक्ष भी बना। यह सब 1980 के दशक में हुआ। ब्रिटिश समाजशास्त्र संघ की पत्रिका 'सोशियोलॉजी' का संपादन करने के बाद से मैं लोगों में जाना जाने लगा–और तब अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ (इंटरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन) की पत्रिका 'इंटरनेशनल सोशियोलॉजी' के संपादन के लिए मुझे आमंत्रित किया गया। यह मेरे लिए एक बड़ा कदम था।

>>

यह 1980 के दशक के मध्य में हुआ जब 'वैश्वीकरण' महत्वपूर्ण विषय बनता जा रहा था। मैक्स वेबर पर अपने शोध प्रबंध को शीघ्रता से पूरा करने के समय, मैंने खुद से प्रश्?न किया : 'मैक्स वेबर आज क्या कर रहे होते, अगर वह जीवित होते?' मैंने सोचा कि वह विश्व इतिहास की इस नई दिशा पर काम कर रहे होते। वे सदैव भू–राजनीति और साथ ही अपनी बौद्धिक परियोजनाओं पर काम करने में रूचि रखते थे; वे एक राजनीतिक व्यक्ति भी थे और मुझे लगता है कि वे वैश्वीकरण में भी रूचि लेते।

इसलिए, मैंने वेबर पर अपनी पुस्तक समाप्त की और उसी वर्ष–1990 में–अपनी सहायक एलिजाबेथ किंग के साथ मिलकर पत्रों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की जो 'ग्लोबलाइजेशन, नॉलेज एंड सोसायटी : रिडिंग्स फ्रॉम इंटरनेशनल सोशियोलॉजी' के रूप में सामने आयी। मेड्रिड में आयोजित आई एस ए वर्ल्ड कांग्रेस में इसे प्रकाशित किया गया तथा कांफ्रेस में विश्व भर से आए 4,000 समाजशास्त्रियों को इसकी एक–एक प्रति वितरित की गई। इसी से हमारे विषय में वैश्वीकरण शब्द का शुभारंभ हुआ।

आर जी जेड : क्षेत्रवाद और वैश्वीकरण से सम्ब) अभी हाल की घटनाओं को देखते हुए ब्रेक्सिट के बाद यूरोपीय संघ के भविष्य के बारे में आप क्या सोचते हैं?

एम ए : मुझे लगता है कि यूरोपीय संघ के साथ एक समस्या यह भी रही है कि पूर्व में उसने दुनिया के बाकी हिस्सों में अपनी पर्याप्त मजबूत छवि विकसित नहीं की। उसने वैश्विक मुद्दों पर अधिक बलपूर्वक नहीं बोला। वह अपनी स्वयं की राजनीति में अधिक घुसा हुआ है। मुझे लगता है कि अतीत में यह उसकी एक कमजोरी रही हैं–परंतु निश्चित रूप से, बीस से अधिक देशों के एक संगठन के लिए एक–दूसरे के अनुरूप होने और सुसंगत ढंग से कुछ निर्मित करना बेहद मुश्किल रहा होगा। बेहद ही मुश्किल।

ब्रेक्सिट के संदर्भ में मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि यूरोपीय संघ के लिये इसके दो परिणाम हो सकते हैं। एक तरफ, यह यूरोपीय संघ को मजबूत और अधिक एकीकृत बनने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है, अपनी कमजोरियों को पहचानना है और यह मानता है कि इसे खुद को बेहतर बनाने के लिए समन्वय की आवश्यकता है। इस परिदृश्य में इसे ब्रिटेन के साथ अपनी वार्ता में एक सामान्य उद्देश्य अधिक आसानी से मिल जाएगा। मुझे लगता है कि यह कहना सही है कि ब्रिटिश सरकार यूरोपीय संघ को मजबूत देखना चाहती है। संघ को कमजोर बनने में किसी की भी रूचि नहीं है। इसलिए यदि सभी पक्ष इस बात से सहमत है तो यह एक जीत की स्थिति है, अगर ब्रिटेन और यूरोपीय संघ सहमत हो सकते हैं तो यूरोपीय संघ मजबूत होगा। यह एक संभावना है। दूसरी तरफ, यह संभावना है कि वहीं ताकतें जिन्होंने ब्रिटेन के निकलने का नेतृत्व अन्य लोगों को यूरोपीय संघ छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगी और सभी को इस बात से डरना चाहिए और ऐसे भी कई देश है, जैसा कि हम जानते हैं, जहां यूरोपीय संघ विरोधी, वैश्वीकरण विरोधी, संस्थापन विरोधी आंदोलन सक्रिय है।

आर जी जेड : शेंगेन नीति के बारे में कुछ बताए, जो यूरोपीय संघ के अंतर्गत आने वाले लोगों के आवागमन पर सीमा नियंत्रण को समाप्त करती है, ऐसा सि)ांत/नियम जिस पर विशेष रूप से शरणार्थी संकट के समक्ष हमला किया गया।

एम ए : जब शेंगेन नीति की बात आती है तो मुझे लगता है कि हमने यह जाना है कि बहुत हद तक यह नेताओं की अक्षमता पर निर्भर रही है। इस पर बहुत ज्यादा चर्चा हो चुकी है कि ''यह एक ऐसा नियम है जिस पर हम बातचीत नहीं कर सकते, ना ही हम समझौता कर सकते हैं।'' नियम कभी भी पूरी तरह से लागू नहीं हो पाते हैं, हमेशा समझौता होता है। पूंजी, श्रम, सेवाओं और सामानों की मुक्त आवाजाही संबंधी यूरोपीय संघ के विस्तृत नियमों का किसी भी देश में पूर्णता से पालन नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए, सामाजिक सुरक्षा कानूनों या निवास जैसे पक्षों के आधार पर लोगों की एक देश से दूसरे देश में मुक्त आवाजाही संबंधी नियमों में भिन्नता होती है। यहां तक कि कई कस्बों/शहरों की अपनी आवासीय योग्यताएं/अर्हताएं भी हैं। मुक्त आवाजाही के इस मुद्दे पर ब्रिटेन और यूरोपीय संघ आपस में बातचीत कर सकते थे बजाय सब कुछ या कुछ नहीं के नियम को लागू करने के। एक अन्य गलती शरणार्थियों के संकट के संदर्भ में हुई–मार्केल को यह नहीं कहना चाहिए था कि ''सभी को आने दो।'' राजनीतिक दृष्टि से यह बहुत कम महत्वपूर्ण हो सकता है और इससे अन्य देशों को शरणार्थियों को पूर्णतः अस्वीकार करने का अवसर मिला, जिसने एक ही समुदाय से संबंधित होने की भावना को बड़े पैमाने पर बाधित किया।

डी ए डी : सोशल मीडिया और सामाजिक आंदोलनों के बारे में बहुत सी बाते हुई। डिजिटल संचार के प्रभाव के विषय में आप क्या सोचते हैं?

एम ए : डिजिटलीकरण के साथ पलने–बढ़ने वाले युवाओं को ऐसा लग सकता है कि सभी आंदोलन डिजिटलीकरण का ही परिणाम हैं अथवा इसके द्वारा ही संभव हुए हैं। परंतु मैं आपको याद दिला दूं कि डिजिटलीकरण से बहुत पहले, 1968 में एक विश्वव्यापी युवा आंदोलन हुआ था। साथ ही 1960 के दशक को 'विरोधी संस्कृति' का युग भी कहा जाता है जो राष्ट्रीय क्रांतियों और विश्वविद्यालयों की उथल–पुथल से सम्बद्ध रहा है। इन आंदोलनों के बारे में रोचक बात यह है कि अलग–अलग देशों में यह अनायास ही हुए। इसके लिए उन्हें सीमाओं के परे जरूरी समन्वय की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि ये आंदोलन समान प्रकार के विकास के साथ समान प्रकार के देशों में समान स्थितियों के कारण हुए।

डिजिटलीकरण एक फर्क जरूर पैदा करता है। यह सहज नेतृत्व को उभारने में सहायक होता है और यह जरूरी भी नहीं कि वह नेतृत्व वो हो जिसकी अपेक्षा हो। चलिये, वैश्वीकरण–विरोधी आंदोलन की बात करते हैं। लगभग 20 साल पहले सन् 1999 में सिएटल में वर्ल्ड ट्रेड आर्गनाईजेशन (विश्व व्यापार संगठन) की बैठक में एक बड़ी घटना पर ध्यान दिया गया। हजारों लोग विशेष रूप से कनाडा से सिएटल आएं। राष्ट्रपति क्लिंटन को इस बैठक में भाषण देना था परंतु अंततः प्रदर्शनों के कारण उन्हें इसे रोकना पड़ा। सोशल मीडिया से ज्यादा परंपरागत मीडिया ने इसे दुनिया भर में प्रसारित किया। 1999 में फेसबुक नहीं था। इसलिए मुझे लगता है, डिजीटलीकरण के प्रभाव अतिश्योक्तिपूर्ण हो सकते हैं। निश्चित रूप से वह संचार को तेज करता है और इस अर्थ में वे प्रतिक्रिया करने की गति को बढ़ाते हैं। राजनेता यह यह बात समझते हैं इसलिए वे अब प्रत्यक्ष संचार के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं; हम पाते हैं कि पारंपरिक प्रेस, समाचार पत्रों में गिरावट आयी हैं, हालांकि टेलीविजन आज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि टेलीविजन का एक स्टूडियो होता है जहां आप लोगों को एक साथ आमने–सामने ला सकते हैं, चाहे वे अलग अलग देशों से भी हों।

अन्य क्षेत्रों जैसे–सुरक्षा, निगरानी, संचार के अवरोधन में डिजिटलीकरण के अधिक दूरगामी परिणाम हैं। इससे अधिकारी एक–दूसरे से ज्ञान, उनके भेद/राज और एक–दूसरे को सहन करने की क्षमता प्राप्त करते हैं जो साधारण संचार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। मैं अब यह जानता हूं कि जो ई–मेल मैं भेजता हूं

>>

उसे बीच में रोका जा सकता है–कोई भी सूचना जिसे हम आगे या पीछे भेजते हैं–यदि कोई इसे रोकना चाहे तो वे ऐसा कर सकते हैं।

डी ए डी : प्रारम्भ से ही समाजशास्त्रियों ने समाज की तुलना एक जैविक इकाई ख्जीवत्र के साथ की है जो निरंतर रूपांतरित होता है। आप इस समरूपता के विषय में क्या सोचते हैं?

एम ए : ठीक है, हम यहां उद्विकास के बारे में बात कर रहे हैं। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया की तुलना में जैविकीय परिवर्तन की प्रक्रिया को अच्छी तरह समझा गया है। मुझे लगता है कि इसका मुख्य कारण यह है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ उत्तराधिकार की प्रक्रियाएं, पहचान निर्माण की प्रक्रियाएं, सामाजिक संस्थाओं के निर्माण की प्रक्रियाएं सांस्कृतिक हैं। मानव संस्कृति की एक बड़ी क्षमता यह है कि व्यक्ति उन स्थितियों से स्वयं को मुक्त रखते हैं जिसमें वे पैदा होते हैं और जिन सामाजिक इकाईयों से वे संबंधित होते हैं। मानव प्रतिभा से खतरे उत्पन्न होते हैं, जो विनाशकारी वस्तुओं का निर्माण करके शेष मानवता को खतरे में डालते हैं–और मैं केवल बम की बात नहीं कर रहा हूं अपितु जीवों और विषाणुओं के आविष्कार के बारे में भी सोच रहा हूं। प्रौद्योगिकी जो हमारी जैविकीय बनावट को बदल सकती है, विभिन्न प्रकार के रोबोटिक्स का विकास हमें कई मायनों में अर्थहीन/अनुपयोगी बना सकता है। हमारी प्रतिभा ने मानव प्रजाति के सम्मुख प्रमुख खतरों को उत्पन्न किया है।

आर जी जेड : ग्लोबल एज संभवतः आपकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक हैं। आज आप इसका मूल्यांकन विशेषकर राजनीतिक गतिशीलता पर अपनी बहस के संदर्भ में कैसे करते हैं?

एम ए : बीस साल पहले 1990 के मध्य में ग्लोबल एस पुस्तक लिखी गई थी। मेरे रूचि यह जानने में थी कि 'वैश्विक' की नई भाषा इतनी लोकप्रिय क्यों हो गई थी। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि 1945 की घटनाएं और बाद में 1970 के दशक की घटनाओं ने वैश्विक मुद्दों को अर्थात पृथ्वी ग्रह के लिए चुनौती को एक नई पहचान दी। यह वैश्विकरण से भिन्न है, जो संकीर्ण अर्थ में विश्व अर्थव्यवस्था में अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राज्य द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली एक विचारधारा है–किसी वैश्विक समस्या का एक विशेष उदाहरण है। युद्ध के बाद के वर्षों में बड़ा मुद्दा परमाणु युद्ध की धमकी, पर्यावरण के खतरे, गरीबी में वृद्धि, समुद्र के प्रदूषण और इसी तरह के अन्य खतरे थे। ये ऐसे मुद्दे थे जिनका विश्व स्तर पर ही सामना किया जा सकता था। यही कारण था कि मेरे लिए वैश्विक भाषा बहुत महत्व पूर्ण बन गई थी।

वैश्वीकरण एक मुद्दा था जो अमेरिकी प्रभुत्व के संदर्भ में राजनीतिक बन गया और विशेष रूप से 1989 व सोवियत संघ के पतन के बाद। इसलिए ग्लोबल एज वास्तव में उन सभी लोगों की प्रतिक्रिया में लिखी गई थी जिन्होंने सोचा था कि वैश्वीकरण एक एकदिशात्मक प्रक्रिया है। वैश्विक युग वह युग है जब मनुष्य सामूहिक रूप से खतरे में है।

अब, बीस साल बाद हम कहां है? मैं कहना चाहूंगा कि वैश्विक युग की राजनीति निश्चित आकार ग्रहण कर रही है। विश्व दो भागों में विभाजित हो चुका है। एक तरफ, आपके पास प्रबुद्ध, वैश्वीकृत या शिक्षित व्यक्ति हैं जो वैश्विक जगत का लाभ उठाते हैं, जो समझते हैं कि चुनौतियां क्या हैं। यह लोगों का एक समूह है और वे नेता हो सकता हैं और विपक्षी भी हर देश में प्रभावी राजनीतिक स्तंभ हो सकते हैं। और फिर दूसरी तरफ, आपके पास शेष लोग हैं। और इन दोनों के बीच विभाजन बढ़ रहा है।

वैश्विक युग की राजनीति अन्तर्राष्ट्रीय बन चुकी है। इसलिए किसी विशेष देश में जो कुछ भी होता है उसे वैश्वीकृत राजनीति की नजर से देखा जाना चाहिए। इसलिए मैं सोचता हूं कि अब हमें यह ज्यादा स्पष्ट है। विडंबना यह है कि जब कोई नीदरलैंड्स में सत्ता के संभावित परिवर्तन या इक्वेडोर में क्या हो रहा है, के बारे में पढ़ता या देखता है तो इन बदलावों को केवल दुनिया भर के अभिजात वर्गों और उनकी स्थानीय आबादी के बीच संबंधों के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। यह एक वैश्विक नजरिया है। किसी देश की राजनीतिक घटनाओं को तब नहीं समझा जा सकता जब तक यह न जान लिया जाये कि उस संदर्भ में कहीं और क्या होता है। वैश्विक युग पर यही मेरी थीसिस (शोध प्रबंध) या धारणा है। मेरा मानना है कि पिछले 20 सालों में जो कुछ हुआ है उनसे ही यह प्रबलित हुआ है। उस संदर्भ में मैं सोचता हूं कि डिजिटलीकरण इतना बड़ा अंतर उत्पन्न कर रहा है जिससे लोग वैश्विक पर अपना ध्यान कम कर सकते हैं और नेटवर्कस (प्रसार तंत्र), कनेक्शनस (संपर्क तंत्र) और संबंधों में अधिक रूचि लेने लगे हैं।

डी ए डी : अपने कैरियर पर नजर डालते हुए बताइए कि वो कौन से तीन विषय है जो आप चाहते हैं कि शुरूआती समय में आपको पढ़ने चाहिए थे।

एम ए : मैं एक ऐसी व्यवस्था में पला–बढ़ा हूं जहां प्राकृतिक विज्ञान और मानविकी विषयों के बीच पूर्ण विभाजन किया गया है इसलिए जब मैं बहुत छोटा था तब से ही मैंने प्राकृतिक विज्ञानों को छोड़ दिया। अब मुझे अनुभव होता है कि प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की बौद्धिक समस्याओं में जितना कभी कभी समझा जाता है, से अधिक समानता है। काश मैंने प्राकृतिक विज्ञानों से संबंधित मुद्दों की बेहतर समझ होती, शक्तियों की पहचान के बारे में और ऐसी भाषा के संदर्भ में जिसे हम उनका विवरण करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। इसलिए मेरी **पहली इच्छा** है कि मैं विज्ञान के बारे में और अधिक जान सकूं।

दूसरी इच्छा : यहां तक कि जब मैं स्कूल में था मैं चीन से बहुत प्रभावित था और जब मैं लंदन स्कूल ऑफ इकनोमिक्स चला गया। तो मुझे एक बहुत अच्छे सिनोलॉजिस्ट (चीनी भाषा व संस्कृति का विशेषज्ञ) द्वारा आयोजित एक सेमीनार में शामिल होने का विशेष अवसर मिला और तब मैंने चीन पर लेख भी लिखें। इसके बाद, 1980 के दशक में मैंने चीन का दौरा भी किया। लेकिन अपने कैरियर में किसी भी मोड़ पर मैंने कभी भी चीनी भाशा सीखने पर विचार नहीं किया। पर मैं अब इसे सीख रहा हूं। लेकिन काश जब मैं अठारह साल का था तब मैंने चीनी भाषा सीखी होती, क्योंकि यह मूलभूत रूप से एक अलग प्रकार की भाषा है, एक अलग तरह की सोच है–और दुनिया के बारे में एक बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण है इसलिए तब मेरे लिए यह एक अच्छी संपत्ति साबित होता जब मैं 18 वर्ष का था।

तीसरी इच्छा : मुझे लगता है जब मैं जवान था तब मेरे पास धर्म की व्यापक समझ होने से मुझे काफी लाभ होता। मेरा पालन–पोषण (चर्च ऑफ इंग्लैंड) इंग्लैंड के चर्च में हुआ था और फिर मैं एक विद्यार्थी था और अनीश्वरवादी भी बन गया था। जैसे मैं बड़ा हुआ मैंने यह अनुभव किया कि दुनिया के धर्मों में गहरी अंतदृष्टि है। बेशक, यहां रोमानिया में आपके पास धर्म पर सबसे आश्चर्यजनक विचारकों में से एक मिर्सी एलीद मौजूद है। जब तक मैंने अपनी उम्र के 50 वर्ष पूरे नहीं किए थे तब तक मैंने एलीद को नहीं पढ़ा था। मुझे अपनी उम्र के 20वें दशक में उन्हें पढ़ना चाहिए था। ■

मार्टिन एल्ब्रो से पत्र व्यवहार हेतु पता <albrowm@hotmail.com>
डायना दुमितरेस्कू से पत्र व्यवहार हेतु पता <diana.dumitrescu@icub.unibuc.ro>
राइसा जामफिरेस्कू से पत्र व्यवहार हेतु पता <raisa.zamfirescu@gmail.com>

> कोसोवो में उपनिवेशवाद की विरासत

इब्राहिम बेरिशा के साथ एक साक्षात्कार

इब्राहिम बेरिशा

इब्राहिम बेरिशा का जन्म कोसोवो गणराज्य में हुआ था। उन्होंने प्रिंशलीना विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और वे फिर क्रोएशिया के जाग्रेब विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर के अध्ययन के लिए चले गए जहां उन्होंने संचार का समाजशास्त्र विषय में पीएचडी (शोध उपाधि) प्राप्त की। एक पत्रकार और संपादक के रूप में कोसोवो और विदेश में काम करने के बाद अब वे कोसोवों के प्रिंशतीना विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में अध्यापन कार्य में संलग्न है। उन्होंने संचार का समाजशास्त्र एवं सामाजिक–संस्कृति का समाजशास्त्र के साथ–साथ गद्य और काव्य के विभिन्न संग्रहों पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। 'द डेथ ऑफ स कॉलोनी' (एक उपनिवेश का अंत) उनकी नवीनतम पुस्तक है। यह साक्षात्कार लेबिनोत कुनुशेव्की द्वारा आयोजित किया गया जो प्रिंसतीना विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र से स्नातकोत्तर हैं।

एल के : आपने अपनी पुस्तक 'द डेथ ऑफ ए कॉलोनी' में कोसोवो के इतिहास को एक उपनिवेश के इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया है। इससे आपका क्या अभिप्राय है?

आई बी : सर्वप्रथम, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि उपनिवेशवादी एक–दूसरे से भिन्न होते हैं और यही बात औपनिवेशिक लोगों पर भी लागू होती है। परंतु किस संदर्भ में? उदाहरण के लिए उपनिवेशवादी उन कथाओं के संदर्भ में भिन्न होते हैं। जिसके माध्यम से वे औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और इसके लक्ष्यों को तैयार करते हैं जिसका वर्णन ऐसी कथाओं/आख्यानों में मिलता है। उदाहरण के लिए, अल्जीरिया में फ्रांस के उपनिवेशवादी लक्ष्यों, भारत में इंग्लैंड के उपनिवेशवादी लक्ष्यों या कांगों में बेल्जियम के औपनिवेशिक लक्ष्यों के मध्य अंतर था।

कोसोवो में सर्बियाई राज्य का उपनिवेशीकरण मिथकों से शुरू हुआ, उसके बाद आर्थिक, राजनीतिक और विस्तारवादी लक्ष्यों को शामिल किया गया। यूरोपीय राज्यों ने मिथकों या विशेष ऐतिहासिक घटनाओं के निर्माण पर अपने औपनिवेशिक कब्जों को आधारित नहीं किया जैसा कि कोसोवो के 1389 युद्ध के माध्यम से कोसोवो के सर्बियाई उपनिवेशवाद में 'सही इतिहास' की मांग की गई थी।

>>

एल के : उपनिवेशवाद के और परिचित स्वरूपों की तुलना में क्या आप कोसोवो के सर्बियाई उपनिवेशवाद के लक्ष्यों के बारे में और कुछ बता सकते हैं?

आई बी : लक्ष्य और प्रक्रियाएं दोनों ही भिन्न हैः ब्रिटिश भारत को देश की आबादी से वंचित करना नहीं चाहते थे। जबकि सर्बिया ने ऐसा किया। सर्बियाई राज्य ने कोसोवो में अल्बोनियाई बहुसंख्यकों की समग्र जाति का सफाया करने की कोशिश की। इस आधार पर राजनीतिक हस्तक्षेप को वैध माना गया कि अल्बेनियाई लोगों को कोसोवो एक बार और हमेशा के लिए किसी भी तरह से अनिवार्यतः खाली करना पड़ेगा। ऐसी कोशिशें कई बार की गई और हाल ही में 1998–99 के दुखद युद्ध के दौरान भी की गई। इस 'प्रयास' में न केवल सर्बियाई राज्य के अधिकारी अपितु धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और कलात्मक संस्थान भी शामिल थे। इसे सरल शब्दों में ऐसे कह सकते हैं कि : फ्रांसीसी दृष्टिकोण से अल्जीरिया एक ऐसा देश था जो अल्जीरियाई जनसंख्या से आबाद था और यह स्पष्ट था कि फ्रांसीसी अंततः अल्जीरिया छोड़ देंगे। सर्बिया के मामले में, कोसोवो एक ऐसे क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो अल्बेनियाई लोगों के द्वारा अस्थायी रूप से बसा हुआ है और उनके आखिरी पलायन तक उन्हें वहां कब्जा रखना आवश्यक होगा।

एल के : क्या आपको लगता है कि औपनिवेशीकरण की रणनीतियां राज्य परियोजनाओं पर बनी थीं या फिर बसने वालों ने उसे आकार दिया था?

आई बी : औपनिवेशीकरण की रणनीतियों का उद्देश्य ठोस प्रभाव पैदा करता था अर्थात् कोसोवो में सामाजिक–जनांकिकीयबदलाव लाना था। 20वीं सदी के बाद कोसोवो में जहां कहीं भी सर्व बसे वहां शहरी और ग्रामीण संरचना तथा वास्तुकला में परिवर्तन आ गया। मध्यकालीन इतिहास की पुनः प्राप्ति ने इन परिवर्तनों के साथ–साथ प्रतिमा छवियों तथा नये गांवों और कस्बों की स्थापना, स्कूल, सड़कें एवं आर्थिक परिवर्तन को पुनः आकार दिया व प्रेरित किया। शहरों और कस्बों में आबादी के संगठन को आसानी से बदला जा सकता है क्योंकि पूरे सर्बियाई प्रशासन को, इसके सैन्य अधिकारियों, फ्रेंच पुलिस फोर्स, न्यायाधीशों और कुछ हद तक राजनेताओं को भी वहां तैनात किया गया था। औपनिवेशिक निवासियों को कृषि सुधार के नाम पर वैध अल्बानियाई मालिकों से प्राप्त संपत्तियों दी गई।

पिछले कृषि सुधार कार्यक्रम में, कम्युनिस्ट युग के दौरान, गांवों के परिवारों के पास अधिकतम 10 हैक्टेयर भूमि और जंगल छोड़े गये थे–यह बेदखल करने का एक तरीका है जिसने परिवार की अर्थव्यवस्थाओं को नष्ट कर दिया। 1950 में 60 या उससे अधिक सदस्यों वाले एक ग्रामीण परिवार के पास केवल 10 हैक्टेयर भूमि छोड़ी गयी थी। इस समय आर्थिक प्रवसन शुरू हुआ। युवा लोगों को बेलग्राद और यूगोस्लाविया के अन्य शहरों में नौकर के रूप में काम करने के लिए जाना पड़ा। सामान्यतः सुनार, नानबाई, हलवाई, कारीगरों ने कोसोवो छोड़ दिया क्योंक घर पर उनके उत्पादों का कोई खरीदार नहीं था। परंतु वे अपने परिवार के साथ सदैव संपर्क में रहते थे और घर पर पैसा भेजते रहते थे।

इसके विपरीत, जहां भी उपनिवेशवादी जाकर बसे उन्होंने केन्द्र सरकार से पूर्ण वित्तीय सहायता का लाभ उठाया। व्यवहार में यह सामाजिक–जनांनकिकीय प्रक्रिया कैसी दिखती है? यदि 1912 में सर्ब लोग कोसोवो की जनसंख्या का 5 प्रतिशत हिस्सा थे तो 199 में यह संख्या लगभग 40 प्रतिशत तक पहुंच गई। उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने न केवल जनांनकिकीय संरचना को बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को भी बदल दिया था। गांवों और शहरों के गैर–नगरीय क्षेत्रों में अल्बालियाइयों के पृथक्करण ने उन्हें सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों से वंचित रखा। और इस पृथक्करण का उपयोग राजनीतिक प्रतिष्ठानों द्वारा अल्बनियाई लोगों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिकों के रूप में व्यवहार करने के लिए किया। वर्षों तक अल्बेनियाई लोग शिक्षा के अधिकार से वंचित रहे (उदाहरण के लिए अल्बेनिया में विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम की शुरूआत मात्र 1970 से हुई), अपनी संपत्ति खोने के बाद वे गरीब हो गये और एक पृथक द्वीप पर रहने लगे। पूर्व यूगोस्लाविया के सभी लोगों में केवल अल्बेनियाई ही ऐसा समूह था जिनकी भाषा स्लावी नहीं थी–यह भी पृथक्करण का एक अन्य कारण था।

एल के : सामान्यतः यह कहा जाता है कि कम्युनिस्ट दौर में टीटो के शासन के अधीन अल्बेनियाई एक बेहतर राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में थे। क्या यह सही है?

आई बी : बेलग्रेड में सरकार अल्बेनियाई लोगों को समान दर्जा देने अर्थात् अल्बेनियाई और सर्ब्स को समान अधिकार व जिम्मेदारियों देने के लिए सहमत नहीं थी। 1966 के बाद शुरू होने वाले टीटो के शासनकाल में क्या हुआ, इसका उल्लेख सच्चे सुधार के बिना कास्मेटिक परिवर्तन के रूप में किया जा सकता है। सर्बिया और क्रोएट्स के बाद यूगोस्लाविया में अल्बेनिया तीसरा बड़ा राष्ट्र था लेकिन यूगोस्लाव राज्य ने इसे बदलने के लिए सक्रियता से काम किया। 1950 के दशक में लगभग 200,000 (दो लाख) अल्बेनियाई लोग कोसोवो छोड़कर चले गए तथा राज्य के उत्पीड़न से बचने के लिए राष्ट्रीय पहचान में एक बड़ा परिवर्तन हुआ : यूगोस्लाविया में 'तुर्कों' की संख्या में–जो कि मुख्यतः अल्बेनियाई है, ने अपनी पहचान को बदलकर किसी प्रकार के अभयारण्य की मांग की–260% की वृद्धि हई जो 1953 में 97,945 थी वह 1961 में बढ़कर 2,59,536 हो गई। टीटो के युग में उपनिवेशवाद का आगे बढ़ना जारी रहा। कोसोवो जो कि जस्ता, चांदी, कोयला, मैग्नीशियम और अन्य खनिजों में समृद्ध है, को प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न क्षेत्र के रूप में गिना जाता था लेकिन अयस्क मुख्य रूप से सर्बिया, वोजोद्दीना और अन्य स्थानों पर प्रोसेस किया जाता था। यही कारण है कि कोसोवो निरंतर अपर्याप्त विकास से पीड़ित रहा।

एल के : अल्बेनियाई समाजशास्त्र में कोसोवो के प्रति सर्बिया की राजनीतिक, नृवंशीय और सांस्कृतिक वर्चस्व की विचारधारा को किस रूप में प्रस्तुत किया गया?

आई बी : कोसोवो में अल्बेनियाई समाजशास्त्र नया है और वहां लंबे समय से धर्माता और सिद्धांतवाद का वर्चस्व रहा है, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र विभाग 1971 में केवल प्रिस्तीना विश्वविद्यालय में खोला गया था और सर्वाधिक प्रसिद्ध अल्बेनियाई समाजशास्त्री, प्रोफेसर फेहमी अगानी जिन्होंने प्रभावशाली पुस्तक 'सोशियोलॉजिकल एंड पॉलिटिकल स्टडीज' लिखी थी, 1999 में कोसोवो युद्ध के दौरान मार दिए गए। प्रिस्तीना विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के एक अन्य प्रोफेसर उक्शीन होति को 1990 के दशक में अभिभाषण की स्वतंत्रता की वकालत करने के राजनीतिक आरोप लगाते हुए गिरफ्तार किया गया था। वे 1999 से लापता लोगों की सूची में रहे हैं। प्रोफेसर होति, जिन्होंने संयुक्त राज्य से शिक्षा प्राप्त की थी, ने भी राजनीतिक समाजशास्त्र पर ध्यान केंद्रित किया।

आज युवा समाजशास्त्रियों की एक टीम ने संस्कृति, सामाजिक संरचना, धर्म, लैंगिक समानता, संचार, राजनीति और अन्य को सम्मिलित करते हुए विषय के दायरे को व्यापक बनाया। इन युवा समाजशास्त्रियों ने मुख्य रूप से विदेशों में शिक्षा प्राप्त की है; वे विभिन्न पद्धतिशास्त्रीय विशेषज्ञता का प्रयोग करते हैं और विभिन्न

>>

प्रश्नों का पता लगाते हैं। यह प्रगति का ही संकेत है कि ये युवा विद्वान अब समाजशास्त्र को वैचारिक लेंस से नहीं देखते हैं—वे लेंस जो प्रचार के रूप में काम करते हैं और समाजशास्त्र के महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों को धीमा करते हैं।

एल के : आज उपनिवेशवाद के क्या परिणाम है?

आई बी : आज हम एक उत्तर–औपनिवेशिक उत्तर–समाजवादी काल के विषय में बात कर सकते हैं। एक कठिन समय निकालने के बाद कोसोवो का समाज पुनर्निर्माण की अवधि में है, वह स्वयं को अंतरराष्ट्रीय वित्तीय, राजनीति और सांस्कृतिक संस्थानों के साथ एकीकृत करने का प्रयास करता रहा है। यद्यपि, यह उम्मीद जगाता है, यह एकीकरण उस प्रभाव/परिणाम को उत्पन्न नहीं कर पाया जो नागरिक चाहते थे। निराशा, आंदोलन की स्वतंत्रता का अभाव एवं बेरोजगारी (विशेष रूप से युवाओं के बीच) लोगों को अतीत एवं पूर्व के भेदभाव एवं अपर्याप्त विकास की विरासत की याद दिलाती है।

अधिक सामाजिक समानता लाने में मौजूदा नीतियों की विफलता ने युवाओं को सनकी बना दिया है। अधिकांश युवा लोग, जो भविष्य के निर्माण के अवसर के रूप में वैश्विक रोजगार बाजार की तलाश में है, कोसोवो छोड़ना चाहते हैं। परंतु वैश्विक बाजार की सफलता के लिए शिक्षा प्रणाली में निवेश और बदलाव की आवश्यकता होती है।

एल के : मिथकों, महिमा मंडन, मतारोपण और प्रचार ने कोसोवो के पर्यावरण को कैसे प्रभावित किया और इसने किस प्रकार अल्बेनियाई लोगों के बीच हीनता की भावना पैदा की? क्या अल्बानिया सर्बियाई वर्चस्व का विरोध करने में सक्षम है?

आई बी : बाल्कन राष्ट्र व्यापक स्तर पर भ्रम उत्पन्न करता है। भविष्य में इन 'गौरवशाली यादों' का वाहक कौन होगा? बुद्धिजीवी, कलाकार या फिर औसत दर्जे के राजनेता। वे लोगों को शांत/चुप कराने के लिए देश, राष्ट्र, नायक और मिथक जैसे भ्रामक शब्दों का प्रयोग करते हैं। उनकी भाषा में लोककथात्मक देशभक्ति, महिमामंडन, अहंकार और धमकियों का प्रभाव है। वे उन राजनेताओं की सेवा करते हैं जो उनकी परवाह किए बिना शक्ति के लिए संघर्ष करते है जिन पर वे शासन करते हैं। बहुत से लोग अतीत में जी रहे हैं, उन लोगों की भावनाओं के साथ खेलकर उनका ध्यान आकर्षित कर रहे हैं जो केवल नौकरी और कल्याण चाहते हैं।

हमारे जैसे सामाजिक वातावरण में मतारोपण व्यापक है। पिछले 5 सालों में अनेक युवा लोग सीरिया और इराक में आई एस आई एस में शामिल हो गए हैं, जो राजनीतिक शून्यता को भरते हैं और अपनी निराशा की भावनाओं को व्यक्त हैं।

एल के : कोसोवो की राजनीति में आज यूगोस्लाव के संदर्भ की क्या भूमिका है?

आई बी : यूगोस्लाविया अब एक इतिहास बन चुका है। यह एक सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलन का परिणाम था जो कि भौगोलिक निकटता पर आधारित था और दक्षिणी स्लावों के बीच ऐतिहासिक राष्ट्रीय और भाषाई संबंध थे। यह एक ऐसी इकाई थी जो जीवित नहीं रह सकती क्योंकि यह समानता के सिद्धांतों पर नहीं बनाया गया था। अल्बानिया को हर प्रकार की समस्या की सामना करना पड़ा और इसलिए उनकी राजनीतिक चेतना में युगोस्लाविया का कोई स्थान नहीं है। ■

इब्राहिम बेरिशा से पत्र व्यवहार हेतु पता <iberisha5@hotmail.com>
लेबिनोत कुनुशेव्की से पत्र व्यवहार हेतु पता <labinotkunushevci@gmail.com>

>आपदा–पश्चात के ओताही में

शक्ति की राजनीति

स्टीव मैथ्यूमेन, ऑकलैंड विश्वविद्यालय एवं एयोतियासेआ न्यूजीलैंड के समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष

2011 के भूकंप के बाद कैथेडरल चौक, ओतॉतही (क्राइस्ट चर्च)

तेजी से शहरीकृत होती धरती जो अभूतपूर्व आर्थिक असमानताओं, ग्लोबल वार्मिंग और सामूहिक रूप से विलुप्त होने की संभावना का सामना कर रही है, में शहरों में स्थिरतापूर्वक एवं समानता से रहने का प्रश्न वैश्विक दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व का हो जाता है। विश्व की अधिकांश जनसंख्या अब शहरों में निवास करती है–2050 तक विश्व की दो तिहाई जनसंख्या शहरों में और तेजी से बढ़ते असमान समाजों में रहने लगेगी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून चेतावनी देते हैं कि ''वैश्विक असमानता में वृद्धि, प्राकृतिक आपदाओं का बढ़ता जोखिम, तीव्र शहरीकरण, ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन प्रणालीकृत वैश्विक प्रभावों के साथ खतरनाक व अप्रत्याशित स्तरों पर जोखिम पैदा करने की चुनौती देते हैं।''

ऊर्जा के असंतुलित उपयोगकर्त्ताओं के रूप में, शहर स्थायी ऊर्जा भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। वे वर्तमान में वैश्विक ऊर्जा की कुल मांग के तीन–चौथाई के लिए जिम्मेदार हैं और यदि आशा के अनुरूप शहरीकरण की प्रक्रिया जारी रहती है तो 2030 तक विश्व को शहर/भूमि उपयोग/ऊर्जा की आधारभूत संरचनाओं में 90 खरब अमेरिकी डॉलर के निवेश की आवश्यकता होगी। अकेले ऊर्जा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने अगले दशक में या उसके बाद 16 खरब अमेरिकी डॉलर के निवेश का अनुमान लगाया है और बताती है कि ''इस निवेश का अधिकांश हिस्सा बिजली के क्षेत्र में ही अवशोषित हो जायेगा।'' इसलिए ऊर्जा प्रावधान और आधारभूत संरचना पर अधिकार प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है।

एओतियारोआ न्यूजीलैंड विश्व के सर्वाधिक शहरीकरण वाले देशों में से एक है और 1980 के दशक के बाद से इस देश में आर्थिक असमानता में सर्वाधिक वृद्धि देखी गइ। हाल ही में हमने 'आपदा के बाद ओताताही (क्राइस्ट चर्च) में बिजली परियोजना' नाम से तीन साल हेतु एक शोध परियोजना शुरू की जिसमें यहां के किसी एक शहर में ऊर्जा की आधारभूत संरचना पर ध्यान केन्द्रित किया गया।

आमतौर पर, एक शहर का पूरी तरह से पुनर्निर्माण करना असंभव है। लेकिन 2010 और 2011 में कैंटरबरी में आए भूकंप ने नये सिरे से स्थायी और समानता आधारित निर्माण करने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया; भविष्य की घटनाओं जैसे प्राकृतिक आपदाओं, जनसंख्या वृद्धि एवं मानवजनित जलवायु परिवर्तन इत्यादि के झटके और दबावों को सहन करने में सक्षम एक समावेशी व लचीली विद्युत ऊर्जा प्रणाली का निर्माण करने का अवसर प्रदान किया।

हम क्राइस्टचर्च को विश्वव्यापी प्रयोगशाला के रूप में देखते हैं : जबकि शोधकर्ता अक्सर महानगरों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं, पृथ्वी की अधिकांश आबादी अब तक पांच लाख लोगों या इससे कम की आबादी वाले छोटे नगरीय केन्द्रों में रहती

>>

हैं और आगे भी रहेगी। क्राइस्ट चर्च की तरह, शहरों में हर जगह जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों और समुद्री स्तर की वृद्धि का साथ हल होना चाहिए। ''क्राइस्ट चर्च अपनी प्राकृतिक आपदाओं के निर्माण के लिए हर दूसरे आधुनिक शहर की तरह है.. ... (लेकिन) उस परिवर्तन के इतना व्यापक होने का कापरण अनोखा है जो एक बार आए भूकंपों से पता चलता है। पूर्व का अधिकांश भाग एक मीटर तक डूब गया, यह एक अंतराष्ट्रीय परीक्षण मंच बन गया कि जब आप एक पैन्केक की भाँति समतल शहर में होते हो जिसका स्तर एक बड़े समुद्र के बराबर होता है तो क्या उम्मीद बचती है और कैसे सामना करना पड़ता है।''

प्रारंभिक तौर पर आशाजनक संकेत मिले थे। तुलनात्मक रूप से इस आकार के किसी भी शहर में इस तरह के उच्च स्तर कर निवेश नहीं हुआ है। क्राइस्ट चर्च ऊर्जा उपयोग के वास्तविक आंकड़ों को विकसित करने वाला पहला और शहरी जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य वाले एक एक्सचेंज मंच 'भविष्य में शहरों के मार्गदर्शक' कार्यक्रम पर वैश्विक स्तर पर हस्ताक्षर करने वाला न्यूजीलैंड का सर्वप्रथम देश था। यह रॉकफेलर फाउंडेशन के 100 लचीले शहरों में भी आता है।

भूकम्प द्वारा 'रिक्त स्लेट' देने के बावजूद सामान्य कामकाज का मॉडल अभी भी प्रचलित है। बिजली का उत्पादन अभी भी केन्द्रीय रूप से जल द्वारा होता है, इसके संचरण और वितरण पर कुछ निजी निगमों का एकाधिकार है किसी भी प्रकार की सौर संरचना नहीं है, ग्राहक–जनित उर्जा का वितरण न्यूनतम है। यद्यपि एओतियारोआ न्यूजीलैंड में वायु ऊर्जा के पर्याप्त संसाधन है, वे मुश्किल से उपयोग में आते हैं।

राष्ट्रीय विद्युत ऊर्जा प्रावधान के व्यापक संदर्भ में यह खोया हुआ अवसर अधिक निराशाजनक है। बीसवीं सदी के मध्य में एओतियारोआ न्यूजीलैंड ने अपनी संपूर्ण बिजली एकल अक्षय स्त्रोत से प्राप्त की : अर्थात पनबिजली विद्युत संयंत्र जो एक अन्य अक्षय स्त्रोत भूतापीय ऊर्जा स्त्रोत से जुड़ा है। हालांकि आज जीवाश्म ईंधन से राष्ट्रीय विद्युत ऊर्जा का एक तिहाई हिस्सा तैयार होता है, जैसा कि बेंजामिन सोवकूल और चार्माइन बाडस ने लिखा, न्यूजीलैंड के बिजली क्षेत्र को, इस अर्थ में अनोखा बनाता है कि वह समय के साथ–साथ नवीनीकरण की क्षमता खो रहा है।

सैद्धांतिक रूप से, 100% अक्षय ऊर्जा की व्यवस्था में परिवर्तन मुश्किल कार्य नहीं होना चाहिए। अक्षय ऊर्जा का लाभ अच्छी तरह से ज्ञात है और गैर–विवादित है। वे नकारात्मक बाह्य कारकों जैसे वायु प्रदूषण को प्रति किलोवाट प्रति घंटा की दर से कम करते हैं, ईंधन की कीमतें आशा के अधिक अनुरूप और स्थिर है तथा ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन कम करते हैं, पानी की कम खपत करते हैं, अधिक कुशल होते हैं और स्थानीय रोजगार के बेहतर अवसर एवं राजस्व प्रदान करते हैं। संक्षेप में, अक्षय ऊर्जा अधिक टिकाऊ और एक बेहतर आर्थिक स्थिति उत्पन्न करती है तथा व्यापक सामुदायिक सम्बद्धता व सशक्तिकरण में वृद्धि के माध्यम से अधिक लचीलेपन की संभावना व्यक्त करती है।

व्यावहारिक दृष्टि से, 100% अक्षय ऊर्जा में बदलाव मुश्किल नहीं होना चाहिए अपितु वर्तमान प्रौद्योगिकी के द्वारा इसका पूरा उपयोग संभव होगा। एओतियारोआ न्यूजीलैंड प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से सम्पन्न है; सरकार के अनुसार, प्रति व्यक्ति अक्षय ऊर्जा के संदर्भ में, हम दुनिया के कुछ सबसे अच्छे पवन ऊर्जा संसाधनों, भरपूर सौर ऊर्जा और असंख्य झीलों व नदियों की अस्थिति के साथ विश्व में प्रथम स्थान पर है। सोवकूल एवं वाट्स का मानना है कि यदि भू–तापीय ऊर्जा को शामिल किया गया तो 2020 तक देश में बिजली क्षेत्र को पूर्णतः नवीकरणीय बनाया जा सकता है।

परंतु ऊर्जा के सवाल हमेशा राजनीतिक और आर्थिक हितों से जुड़े होते हैं तथा नई प्रौद्योगिकी या प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास (क्षय) सामाजिक, सांस्कृतिक और संस्थागत कारकों व राज्य की नीति से भी कम महत्व के हो सकते हैं। अक्सर, राजनीतिक अभिजात वर्ग और उभरती औद्योगिक इकाईयों का ऊर्जा विशेषज्ञों, स्वदेशी समूहों और सामुदायिक कार्यकर्त्ताओं पर प्रभुत्व स्थापित होता है – इतना अधिक प्रभुत्व होता है कि ऊर्जा के नवीकरणीय (विशेष रूप से छोटे पैमाने व स्थानीय स्तर पर उत्पादन में) के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं कि ये बड़े और सकेन्द्रित संयंत्रों को पसंद करते हैं।

उन लोगों की पहचान करने के लिए समाजशास्त्रीय शोध की अत्यधिक आवश्यकता है, जो महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं, किन आधार पर वे ऐसा करते हैं और किस प्रकार के परिणाम उत्पन्न होते हैं। विडंबना यह है कि सामाजिक विज्ञानों ने अधिकतर ऊर्जा और बुनियादी संरचना को – जो आधुनिक अस्तित्व की मैट्रिक्स है–नजरअंदाज किया है, हालांकि हाल के वर्षों में इस सोच में परिवर्तन आया है क्योंकि ऊर्जा प्रणालियों को सामाजिक प्रणालियों के रूप में तेजी से स्वीकारा जा रहा है। जैसे–जैसे सामाजिक विज्ञान एक नए 'बुनियादी ढाँचे की ओर' रूख कर रहे हैं, नए शोधार्थी परीक्षण कर रहे हैं कि किस प्रकार की बुनियादी संरचनाएं हैं (प्रशासन की जीविका के साधन और तरीके) और वे क्या करती हैं (प्रकृति और संस्कृति के बीच मध्यस्थता, सामाजिक और पर्यावरणीय लाभों व हानियों का वितरण, स्थानीय को वैश्विक से जोड़ना और जैसा कि हम जानते हैं आधुनिक जीवन को आधार प्रदान करते हैं)।

शहरों का पुनर्निर्माण करना एक मुश्किल काम है, शायद ही कभी सामना किया है। आतियरो न्यूजीलैंड में नैपियर भूकंप के बाद 1931 में यह आखिरी बार हुआ था। अभी क्राइस्ट चर्च में बहुत कुछ करना बाकी है : पुनर्निर्माण करना एक धीमी, दर्दनाक/दुखद और अत्यधिक समस्यापूर्ण प्रक्रिया है। कैंटात्रिया के आवासीय सर्वेक्षण निरन्तर सरकार की पुनः प्राप्ति की प्राथमिकताओं के प्रति व्यापक असंतोष व्यक्त करते हैं।

परंतु अभी भी आशा की किरण बाकी है। 'क्राइस्ट चर्च भूकंपों के लिए माओरी आपदा प्रबंधन की प्रतिक्रिया और बाद में शहरों के पुनः निर्माण की प्रक्रिया में अच्छा कार्य एक उदाहरण है' जिसकी चर्चा क्रिस्टीन केनी और सुजैन फिन्स ने की है। 'आपातकालीन प्रबंधन के दौरान माओरी जोखिम प्रबंधन के प्रयास सहयोगी और प्रभावी थे तथा इन्हें कूपापा (Kaupapa) (सांस्कृतिक मूल्यों), विशेष रूप से 'अरोहा नई की ते तेगता' (सभी लोगों तक प्यार का विस्तार करना) के मूल्यों द्वारा आकार दिया गया।' आपदा के बाद ओताताही के लोगों ने 'अस्थायी शहरीकरण' में विश्वस्तरीय रचनात्मकता प्रदर्शित की, समुदाय के द्वारा अल्पकालीन/अस्थायी प्रकृति के निर्माण जैसे–सामुदायिक उद्यान, आयोजन स्थल और पार्क इत्यादि–जो साझा शहरी जीवन का बढ़ावा देते हैं।

क्या ये सामुदायिक नवाचार शहरी संरचनाओं को अधिक स्थायी और दीर्घकालिक बनाए रखने के लिए शिक्षा प्रदान करते हैं? जैसा कि हम तीन साल के अनुसंधान कार्यक्रम में बिल्कुल प्रारम्भ से पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को सिखाना शुरू करते हैं, हम आशा करते हैं कि जो पाठ हम सीखते हैं, वे उन लोगों के लिए नवाचारी समझ, व्यावहारिक मार्गदर्शन और नीतिगत विचार प्रदान कर सकते हैं जो मजबूत, पारदर्शी, न्यायसंगत, सांस्कृतिक रूप से उचित और टिकाऊ विद्युत ऊर्जा प्रणालियों की योजना बना रहे हैं। ■

स्टीव मैथ्यूमेन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<s.matthewman@auckland.ac.nz>

> आपदा पश्चात के भूगोल में सृजनशील खेल

होली थोर्प, वेइकातो विश्वविद्यालय, एओटीअरोआ न्यूजीलैंड

नये स्केट पार्कों में से एक के बाहर होली थोर्प का फोटो

युद्ध एवं प्राकृतिक आपदाओं के संदर्भ में, बच्चों एवं युवाओं को अक्सर सबसे ज्यादा असुरक्षित माना जाता है। हालांकि बच्चों एवं युवाओं को उच्च स्तर के शारीरिक, सामाजिक, मानसिक एवं राजनीतिक जोखिम से रूबरू माना गया है, परंतु बच्चों एवं युवाओं को सिर्फ ''शिकार'' मानना, उनकी सृजनात्मकता, संसाधनपूर्णता एवं एजेंसी के अनूठे प्रकारों को नजरअंदाज करता है।

इस ''घाटे के मॉडल'' के परे जाने की चेष्टा में, मैंने स्थानीय आवाजों को स्थान प्रदान कर एवं युद्ध, युवाओं के संघर्ष और आपदा के जीवन्त अनुभवों को प्राथमिकता दे, एक तीन–वर्षीय तुलनात्मक अध्ययन प्रारम्भ किया है। इस रायल सोसाइटी मारसडन फण्ड प्रोजेक्ट में सम्मिलित दो मामलें राजनीतिक अस्थिरता और निरंतर चल रहे संघर्ष के संदर्भ में गैर–प्रतिस्पर्धी क्रियात्मक खेलों में युवाओं की संलग्नता पर केन्द्रित हैं : पहला, स्केटीइसटन अफगानिस्तान में वंचित बच्चों के लिए एक गैर–सरकारी स्केटबोर्डिंग विद्यालय है; और दूसरा, गाजा में जमीनी पार्कोर समूह है।

अन्य दो मामलों में, मैं प्राकृतिक आपदा की त्रासदी झेलने वाले समुदाय में रहने वाले युवाओं के साथ उनकी पुनर्वास की लंबी प्रक्रिया के दौरान एक्शन खेलों का इन युवाओं पर पड़ने वाले सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और नागरिक महत्व का अन्वेषण कर रही हूं। हम 2010 और 2011 के भूकंप के बाद क्राइस्टचर्च और 2005 में न्यू ओरलियेन्स में आये तूफान कैटरीना का अध्ययन कर रहे हैं।

भूकंप–पश्चात के क्राइस्टचर्च, न्यूजीलैंड पर शोध के प्रारंभिक निष्कर्ष अभी से युवा किस प्रकार अपने दैनिक जीवन में युवा किस प्रकार शक्ति की बहु एवं परस्पर काटने वाली संरचना को नेविगेट करने वाले अनगिनत, अक्सर गूढ़ तरीकों के बारे में अर्न्तदृष्टि प्रदान कर रहे हैं। ये तरीके विशेष रूप से उनकी खेलों में प्रतिभागिता और नागरिक संलग्नता पर केन्द्रित हैं। 2011 के भूकंप में 185 लोग मारे गये एवं इससे कई अधिक घायल हुए। इसने मुख्य शहर को ध्वस्त कर दिया और लगभग 200,000 घरों को नुकसान पहुंचाया या नष्ट कर दिया। अत्यावश्यक बुनियादी ढाँचे–सड़कें, गंदी नालियाँ एवं जल को नष्ट करने वाला भूकम्प खेल कूद की सुविधाओं (उदाहरण के लिए जिम, खेल के मैदान, तरणताल, क्लब रूम, स्टेडियम) को भी नष्ट करता है। इन सुविधाओं का ध्वंस होना विरले ही तात्कालिक चिंता का विषय है लेकिन इनकी कमी प्राकृतिक आपदा के बाद के सप्ताहों और महीनों में अक्सर महसूस की जाती है जब रहवासी अपने दैन्य जीवन और रूटीन को पुनः स्थापित करने का प्रयास करते हैं। संगठित, प्रतिस्पर्धी और मनोरंजनात्मक खेलों में जुड़े खिलाड़ी और रहवासियों के भूकंप–पश्चात के अनुभवों को नजरअंदाज किये बिना, मैंने गैर–प्रतिस्पर्धी, अनियंत्रित एक्शन या ''लाइफस्टाइल'' खेलों में संलग्न उच्च–प्रतिबद्धता वाले प्रतिभागियों के अनुभवों पर ध्यान केन्द्रित किया है और यह पता लगाने का प्रयास किया है कि ये व्यक्ति भूकंप के बाद खेलों में अपनी भागीदारी के साथ किस प्रकार समायोजन करते हैं।

भूकंप के तुरन्त बाद, अधिकांश प्रतिभागियों ने खेल–कूद गतिविधियों को परिवार एवं मित्रों के स्वास्थ्य एवं खुशहाली की

>>

तुलना में कम महत्व का माना। हालांकि भूकम्प के कुछ सप्ताह बाद, कई ने उनके खेलकूद में उनकी भागीदारी को होने वाले नुकसान को पहचाना। एम्मा, एक जोशीली सर्फर ने जैसा समझाया, ''एक बार जब हमारे अधिकांश कार्य पूरे हो गये, हमें यह महसूस हुआ कि हमारे जीवन में बहुत बड़ी कमी थी।'' कई लोगों के लिए, खेलने के उनके प्रिय स्थानों को नुकसान ने उनके सुपरिचित, गहन रूप से संलग्न खेलकूद अभ्यास को अवरूद्ध किया। स्केटबोर्डरस के लिए, शहर के सिटी सेण्टर को 'रेड जोन' में बदलने का अर्थ एक प्रिय नगरीय खेल के मैदान का लोप होना। पर्वतारोहियों ने न सिर्फ इनडोर आरोहण सुविधा को खोया बल्कि पोर्ट हिल के हजारों आरोहण योग्य पहाड़ी रास्तों को भी खोया, जबकि पहाड़ी साइकिल चालकों ने इस क्षेत्र के सैंकड़ों मार्गों को खोया। प्रमुख सीवर लाइनों में व्यापक क्षति से क्राइस्टचर्च सिटी काउंसिल को अपशिष्ट पानी को नदियों में छोड़ने पर विवश होना पड़ा जिसके कारण नौ महीनों के लिए स्थानीय समुद्र तटों को बंद करना पड़ा जिसने स्थानीय सर्फरों और समुद्र तट के अन्य उपयोगकर्त्ताओं की दैनिक दिनचर्या में बाधा पहुंचाई।

अध्ययन में संलग्न प्रतिभागियों ने अवरूद्ध खेल अभ्यास होन से मजबूत शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रत्युत्तरों का वर्णन किया, जबकि दूसरों ने खेल की प्रिय स्थानों के जाने का गहन रूप से दुख प्रकट किया : जापानी पर्वतारोही यूकिमि ने कहा, ''हमारे द्वारा खोये गये स्थानों के लिए मुझे दुख होता है।'' ''मेरे प्रिय चढ़ाई वाले स्थान वहां थे, मेरे प्रोजेक्ट वहां थे। मैं उनकी कमी महसूस करता हूं।''

सांस्कृतिक भूगोलवेत्ता टिम एडेनसर लिखते हैं कि लोग अधिकतर प्रमुख व्यवधानों के प्रभावों को कम करने के लिए सुपरिचित जगहों, दिनचर्या और समय को बहाल'' करने का प्रयास करते हैं। निश्चित रूप से यह क्राइस्टचर्च में रहने वाले कई जीवनशैली खेल प्रतिभागियों के लिए सही था। इनमें से कई ने अपने दैनिक तनावों से निपटने निजी और सामूहिक पहचान को निर्माण करने, और नये क्राइस्टचर्च में अपनत्व की भावना को मजबूत करने के लिए खेल निकायों एवं जीवनशैली की परिचित लय को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, कई जोशीले सर्फरों ने क्राइस्टचर्च के बाहर प्रदूषण–रहित सर्फिंग समुद्री तटों पर जाने के लिए कार–पूल की, और कई पर्वतारोहियो ने समूह में बोल्डरिंग यात्राएं आयोजित की। इस प्रकार समुद्री तट और बोल्डरिंग मार्ग, जिसे एलिसन विलियम्स ''चिकित्सकीय परिदृश्य'' कहती है, बने।

कुछ क्राइस्टचर्च निवासियों के लिए खेलकूद में सहभागिता ने दैनिक जीवन के तनावों से बचने (चाहे अस्थाई रूप से ही) में मदद की। उदाहरण के लिए, आरोन, एक उत्साही सर्फर ने अपने साथियों के साथ सामाजिक अन्तर्किया के लिए सर्फिंग के महत्व को समझाया : ''सर्फिंग के अन्तर्गत एक समुदाय की सशक्त उपस्थिति रहती है.......... आप वापिस आते हैं (अपने सर्फ से) और कम से कम कुछ दिनों के लिए एक शांत जगह पर रह सकते हैं।[1]

क्राइस्टचर्च के कुछ युवाओं ने भूकम्प प्रभावित स्थानों के पुनः हड़पने के लिए कार्य किया जो भूकम्प के प्रति उनके रचनात्मक प्रतिक्रिया का प्रदर्शन है। अपने खेल की संस्कृति की ''स्वयं करो'', सत्तावादी–विरोधी दृष्टिकोण को अपनाते हुए, कुछ स्केटबोर्डरस ने तोड़ने के लिए चिन्हित इमारतों में इनडोर स्केट–पार्क बना लिये। ट्रेन्ट ने क्षतिग्रस्त इमारतों के उपयोग को ''उन लोगों को सलाम जो हमें नीची निगाहों से देखते हैं और सोचते हैं कि हम केवल उत्पाती, बेकार स्केटर्स हैं'' के रूप में वर्णित किया। केवल बैठे रहने और नुकसान के बारे में विलाप करने की बजाय (हम) वहां कुछ कर रहे हैं और यह कह रहे हैं कि ''देखों, हम इस टूटे हुए सामान के साथ क्या कर सकते हैं।'' भूकम्प से नष्ट स्थानों के रचनात्मक उपयोग से, स्केटबोर्डरस ने भूकम्प–पश्चात के शहर में भिन्न स्थानिक पुनः कल्पना का निर्माण किया। ऐसा करने से, उन्होंने भूकम्प प्रभावित स्थानों को मृत, नष्ट और विध्वंस के लिए उपयुक्त समझने वाली प्रभुत्व वाली पाठ्य सामग्री को धीमे से बिगाड़ा।

भूकम्प के बाद, वैकल्पिक खेलकूद व्यवहार शारीरिक और भावनात्मक आपदा भूगोल को पुनः परिभाषित करने और सामाजिक नेटवर्कों और संपर्कों के पुनर्निर्माण करने का एक अवसर प्रदान करते हैं। लेकिन इस प्रकार के एक्शन–खेल प्रयासों में शोषणात्मक और बाजारी पक्ष भी हो सकते हैं। 2015 में अमरीकी डेनिम कारपोरेशन लेवीस स्ट्रास ने घोषणा की कि वह सामुदायिक स्केट पार्क के भवन के निर्माण लिए $ 180,000 NZ दान करेगा।

अधिकांश स्थानीय युवा और अभिभाव के लेवीस प्रायोजित स्केट–पार्क का कड़ाई से समर्थन किया। पारराष्ट्रीय कारपोरेशन के निवेश की आलोचना करने की बजाय उन्होंने इस पेशकश को खुले हाथों से अपनाया। हालांकि, कुछ स्थानीय निवासियों ने लेवीस स्ट्रास के आपदा–पश्चात के क्राइस्टचर्च में निवेश करने के आर्थिक इरादे के बारे में चिंता व्यक्त करने के लिए आनलाइन काउंसिल सबमिशन फोरम को काम में लिया। इस प्रक्रिया की टिप्पणियां ''हमें पर्यावरण को बढ़ाने के लिए कल्पनायुक्त तरीकें (sic) चाहिये न कि एक खराब बाजारी विज्ञापन'' या लेवीस एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी है जो अपनी कम्पनी के सर्वश्रेष्ठ प्रोफाइल को तलाश रही है। वे समुदाय के लिए बिल्कुल नहीं चिंता करते हैं, द्वारा स्थानीय निवासियों ने अपनी चिंता व्यक्त की। इसे नेओमी क्लीन ने ''आपदा पूंजीवाद'' की संज्ञा दी है, जिसमें एक अंतर्राष्ट्रीय कार्पोरेशन ने भूकम्प के द्वारा उत्पन्न अव्यवस्था और खेलकूद एवं मनोरंजनात्मक सुविधाओं के लिए काउंसिल फंड के अभाव में एक अनूठी विपणन अवसर को देखा।

हमारा अध्ययन जो अभी चल रहा है युद्ध और आपदा की स्थितियों में जीवन में सुधार लाने के लिए अनौपचारिक खेलकूद गतिविधियों द्वारा पेश विभिन्न संभावनाओं के बारे में और साथ ही ऐसे प्रयासों को समर्थन या अवरूद्ध करने वाली शक्ति के विभिन्न स्वरूपों के बारे में शायद प्रथम वैश्विक अन्वेषण है। हमारा अध्ययन ऐसे कुशल युवा जो स्थानीय परिस्थितियों का प्रत्युत्तर देते हैं, मगर साथ–साथ ही वे वैश्विक शक्ति संरचना और पारदेशीय नेटवर्कों से प्रभावित भी होते हैं, का खुलासा करता है। ■

होली थोर्प से पत्र व्यवहार हेतु पता <thorpe@waikato.ac.nz>

> प्रताड़ना को दबाना

एलिजाबेथ स्टेनली, विक्टोरिया युनिवर्सिटी ऑफ वैंलिंगटन, एओटिरोआ, न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड संस्था ''चाइल्ड मैटर्स'' से–बाल शोषण की रोकथाम के लिए शिक्षित करना

ब्रेक्सिट वोट और डोनाल्ड ट्रंप के प्रभुत्व के समय में, न्यूजीलैंड की आव्रजन वेबसाइट ने अपनी गृहभूमि से दूर जाने के इच्छुक लोगों की रूचि की झड़ी देखी है। न्यूजीलैंड (NZ) निश्चित रूप से आकर्षक हैः फिल्म निर्माता हमारी सुंदर पृष्ठभूमि को कैद करना चाहते हैं, और देश, सचमुच ही, दूध और शहद की भूमि है। हमें एक स्वागत करने वाला प्रगतिशील और मानवाधिकारों के प्रति सचेत देश माना जाता हैः 1893 में न्यूजीलैंड की महिलाएँ दुनिया में सबसे पहले वोट पाने वाली थी; द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, कीवियों (न्यूजीलैंड के लोग) ने अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों के विकास में केंद्रीय भूमिका निभायी थी; और हम अपराधों के प्रति हमारे सुधारात्मक न्याय परिप्रेक्ष्य के लिये जाने जाते हैं।

फिर भी, करीब से निरीक्षण करने पर, न्यूजीलैंड की चमक फीकी पड़ने लगी है। गरीबी फैल रही है, यौन उत्पीड़न की दरें अधिक है और नवउपनिवेशवाद के संदर्भ में, माओरी कारावास की उच्च दरों का आघात सहन करते हैं। एक छवि, जो संभावित अप्रवासियों को आकर्षित करती है, अपवर्जन, हाशियाकरण और अपराधीकरण से अक्सर चिन्हित हो राजनीति, नीतियों और प्रथाओं को भी झूठा साबित करती है।

यह कहीं भी इतना स्पष्ट नहीं हुआ जितना कि राज्य की देखभाल और संस्थागत वातावरण में व्यस्कों द्वारा किये गये प्रणालीगत बाल दुरूपयोग को दी गयी न्यूजीलैंड की प्रतिक्रिया में हुआ। हाल के वर्षों में, हजारों न्यूजीलैंडवासी दुरूपयोग की गवाही देने के लिये साहसपूर्वक आगे आये हैं। मेरी पुस्तक द रोड टू हैल में 105 पीडितों ने बताया कि वे राज्य देखभाल के अधीन थे और कल्याण आवासों में रहे थे। यह 100,000 से अधिक बच्चों का सिर्फ एक छोटा सा भाग है जो 1950 से 1990 के बीच इन संस्थाओं में रहा।

ये गवाहियां डरा देने वाली हैं। सामाजिक कल्याण कार्यकर्ता अक्सर भाई–बहनों को अलग कर देते हैं, कभी–कभी उन्हें सैंकड़ों मील दूर रखकर। वे बच्चों को अंधेरी, पृथक सुरक्षित कमरों में कई दिनों और महीनों के लिये रखते, और कभी कभी युवाओं को भागने के कारण और शराबर करने के कारण बिजली के झटके देते थे। जिन बच्चों ने शिकारी व्यस्कों के द्वारा यौन उत्पीड़न की शिकायत की, उन्हें चुप रहने के लिये कहा गया। रिहायशी सुविधाओं में सीमित और कभी कभी कोई शैक्षणिक सुविधायें नहीं थी, और संस्थागत अनुपालनाओं को सुनिश्चित करने के लिये ''सरगना'' बच्चों को उनके साथियों को नियंत्रित करने के लिये कहा गया। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं अपने देखरेख के अन्दर के बच्चों को कहते कि उन्हें कोई प्यार नहीं करता है, और अधिकांश छोटे से दुर्व्यवहार के लिये–बच्चों को पट्टे से मारना जब तक खून ना निकल आये या टूथब्रश से फर्श को साफ कराना–जैसे हिंसक और अपमानजनक दंड देते थे। बच्चों को कैदियों के रूप में देखने में, उन्होंने राज्य देखभाल संस्थाओं के लिये स्थापित अपेक्षाकृत प्रगतिशील नीतियों और नियमों की अनदेखी की, बल्कि डर से भरे हुये आघात पहुंचाने वाले केंद्रों को चलाया।

कई वर्षों बाद, पीडितों ने अपने अतीत का खुलासा करना शुरू किया कि कैसे राज्य संस्थाओं ने उन्हें प्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचायी और उनकी देखभाल करने में असफल हुआ। अवसाद से लेकर आघात के पश्चात तनाव विकार, गंभीर चिंता, मादक द्रव्यों का सेवन, पारिवारिक हिंसा, कारावास की सजा तक – इनकी उल्लंघन की लंबे समय से चल रही विरासत का लेखाजोखा देते हुये–ये पीड़ित इस आशा से आगे आये हैं कि उनके अनुभवों को व्यापक रूप से स्वीकार समझा और ध्यान के साथ जवाब दिया जायेगा।

इसके बजाय, न्यूजीलैंड सरकार ने समस्याओं के लिये कमर कस ली है। जबकि कई देश – ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूके, आयरलैंड ने अन्य के साथ उत्पीड़न के पीड़ितों को सार्वजनिक स्वीकृति और व्यक्तिगत समर्थन प्रदान करने की कठिनाईयों से जूझ रहे हैं, न्यूजीलैंड की प्रतिक्रिया, कैसे राज्य, परिणामों की परवाह किये बगैर, राज्य वैद्यता, हितों और वित्त को सुरक्षित करने के लिये सत्य–कथन का प्रबंध कर सकता है, का दर्दनाक सबक प्रस्तुत करता है।

अधिकांश उत्पीड़न दावेदारों ने सामाजिक विकास मंत्रालय (एम. एस. डी.) की ''हिस्टोरिक क्लेमस् यूनिट'' के माध्यम से निवारण की

>>

मांग की है। दुर्भाग्य से, यह मंत्रालय वही सरकारी विभाग है जिसके खिलाफ दावे किये जा रहे हैं। कई पीड़ित अपने उत्पीड़न के लिये जिम्मेदार एजेंसी पर कभी भरोसा नहीं करेंगे, और उन्हें इकाई और उसके ''मालिक'' के बीच कोई स्वतंत्रता नहीं दिखायी देती है। एक पीड़ित, पीटर, ने टिप्पणी की, ''यह ऐसा कहने के समान है कि मैं अपने को एक निराधार गुदा परीक्षण के लिये प्रस्तुत करता हूं..... वे आपको एक संतोषजनक उत्तर नहीं देंगे।''

दरअसल, कई पीड़ितों ने मंत्रालय में एक अविश्वास और अवमानना की संस्कृति का सामना किया है, जो कई सालों से महत्वपूर्ण उत्पीडन के दावों की जांच करने में असफल रहा है, अक्सर इस असंभावित धारणा पर काम करते हुये कि कोई भी उत्पीडन आधिकारिक रूप से दर्ज किया गया होगा। पीड़ितों को कहा गया कि क्योंकि उनकी फाइलों में दुर्व्यवहार के आरोपों को साबित करने के लिये कुछ नहीं है, उनके दावे अमान्य हैं।

मंत्रालय ने पीड़ितों को यह कहते हुये कि दावेदारों की हानियां देखभाल के दौरान उत्पीडन से नहीं परंतु उनके जीवन के अन्य अनुभवों से उभरी हैं लगातार चल रही समस्याओं के लिए दोषी भी ठहराया है। उदाहरण के लिये, सू, को सूचित किया गया कि उसके पास कोई वैध दावे नहीं है क्योंकि मंत्रालय को लगता है कि उसकी समस्यायें उसके मद्यपान का परिणाम है जो कि उसके प्रारंभिक जीवन से ही शुरू हो गयी थी। प्राधिकारियों ने सू के मद्यपान और हिंसा, यौन उत्पीडनों और एकांत कारावास के उसके अनुभवों और राज्य देखभाल के दौरान पढ़ाई की कमी के बीच किसी भी संबंध को स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

हाल के वर्षों में, मंत्रालय ने ''फॉस्ट–ट्रैक'' प्रक्रिया अपनायी है जिसने 700 से अधिक दावों का निपटारा किया है। पीडित उनके उत्पीडन के पहलुओं को पहचानते हुये माफी के एक संक्षिप्त पत्र प्राप्त करने से अक्सर आभारी होते हैं– आमतौर पर उन्होंने पहली बार किसी आधिकारिक अफसोस के बारे में सुना है। कुछ पीड़ितों को मुआवजा मिलता है, यद्यपि (लगभग 20,000) न्यूजीलैंड डॉलर का औसत भुगतान अन्य न्याय सीमा की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। हालांकि, अपनी राशि प्राप्त करने के लिये, पीड़ितों को आगे किसी कानूनी दावा करने के अधिकार को छोड़ना पड़ता है–और एक नये मोड़ में, जिन्हें कोई मुआवजा मिला है, इन चेतावनियों का सामना करना पडता है कि मंत्रालय, इस आधार पर कि उनके पास बहुत सारी संपत्तियां है, उनके कल्याणकारी लाभों में कटौती करेगा।

हालांकि, यहां निपटारे के लिये आगे दो वैकल्पिक मार्ग हैं। पहला, पीडित कानूनी मामले ला सकते हैं, हालांकि राज्य दोवों को कम करने के लिये अक्सर कानूनी तकनीकों पर भरोसा करता है। सीमाओं के कानून के तहत, उनकी बाध्य करने वाली प्रकृति के बावजूद, पीडितों को कहा जाता है कि उनके दावे पुराने हैं। इसके आगे, राज्य एजेंसियां अपनी कानूनी मदद वापिस ले सकती हैं विशेषकर जब उन्हें लगता है कि आगे दावे सफल नहीं होंगे।

दूसरा, 2008 और 2015 के मध्य, पीडित अपने अनुभव कॉन्फिडेंशियल लिसनिंग एंड असिस्टेंस सर्विस को बता सकते हैं, और फिर सीमित सहायता प्राप्त कर सकते थेः दस परामर्श सत्र, रिकॉर्ड और रिश्तेदारों को ढूंढने में मदद, इत्यादि। हालांकि, जैसा कि सर्विस के शीर्षक ने स्पष्ट किया, यह प्रक्रिया उत्पीडन के दावों के सार्वजनिक खुलासे से बचते हुये गोपनीय रहती है। जैसा कि सू ने कहा, ''हमारे पास यहां वैस्टमिंस्टर प्रणाली नहीं है, हमारे पास एक्समिंस्टर[1] प्रणाली है,'' जिसने सबसे गंभीर राज्य हिंसा और नुकसानों पर सार्वजनिक चुप्पी बनाये रखने का काम किया है।

राज्य द्वारा उपेक्षा, हाशियाकरण और गंभीर हिंसा के इतिहास को छुपाने का मतलब है कि हम पीडितों के लिये चीजें बेहतर नहीं करते हैं। और उल्लंघन जारी रहते है। बच्चों के खिलाफ न्यूजीलैंड राज्य के उत्पीडन कार्यों, विद्यालयों में सुरक्षित कमरों से लेकर लंबे कारावास में बंद करने, बाल, युवा और परिवार आवासों या अनेक आउट–ऑफ–होम देखभाल स्थितियों में गैरवाजिब दंड तक की चल रही गाथा शर्मनाक है। अतीत को मौन करने में, यह प्रक्रिया उत्पीडन प्रथाओं के लिये सामाजिक–सांस्कृतिक और संस्थागत सहनशीलता को कायम करती है।

अन्य देश अधिक उपयुक्त दृष्टिकोण के उदाहरण प्रस्तुत करते हैंः खुले तौर पर मुश्किल कहानियों को कहना, राज्य की भूमिका को स्वीकार करना, उत्पीडन और लंबी अवधि के नुकसान के मध्य कडी का रेखांकन, सहायता प्रदान करना, निवारण के लिये स्वतंत्र न्यायिक उपाय और सार्वजनिक रूप से माफी मांगना। एक नैतिक सुधार के आवश्यक स्वरूप के तौर पर, एक दोषी राज्य की हिंसा के घिनौने कृत्यों की जिम्मेदारी लेने की इच्छा आघात के अनगिनत शिकार लोगों, जो शर्म, डर, निराशा और हानि के साथ रहते हैं, की मदद कर सकती है। आधिकारिक स्वीकृति, शायद ''कमीशन ऑफ रिकॉग्निशन, रिपेयर एंड प्रीवेंशन'' के माध्यम से पीड़ितों को अतीत से समझौता करने में मदद कर सकती है, और यह एक राष्ट्रीय प्राथमिकता होनी चाहिये। ■

[1]एक्समिंस्टर ''एक्स'' शब्द पर आधारित है जिसका मतलब है ''छुटकारा पाना''।

एलिजाबेथ स्टेनली से पत्र व्यवहार हेतु पता <elizabeth.stanley@vuw.ac.nz>

> सक्रियतावाद और अकादमिक जगत

डायलन टेलर, विक्टोरिया विश्वविद्यालय वेलिंगटन, एओतियारोआ, न्यूजीलैंड

मैल्कम X का एक उद्धरण वामपंथी थिंक टैंक आर्थिक और सामाजिक शोध, एओतियारोआ को प्रेरित करता है

एओतियारोआ न्यूजीलैंड में संसदीय राजनीति अस्थिरता की स्थिति में है। देश की पाँचवी राष्ट्रीय सरकार, जिसे एक और कार्यकाल मिलने की संभावना है, ने 1984 में चौथी लेबर सरकार द्वारा शुरू किये गये नवउदारवादी प्रोजेक्ट को जारी रखा है। जाहिर रूप से ऐसा उन्होंने कर–कटौती, निजीकरण को बढ़ावा और रोजगार कानून में नियोक्ता–केन्द्रित परिवर्तनों को आगे बढ़ा कर किया है। इसके परिणाम पूर्वानुमानित रहे हैं : असमानता का गहराता स्तर, बेघरों की दरों में वृद्धि, और तेजी से बढ़ता अनिश्चित रोजगार।

2017 के चुनावों से पहले एक समझौता ज्ञापन से जुड़ी लेबर और ग्रीन पार्टियों ने, यदि वे चुनाव जीतती हैं, तो सार्वजनिक रूप से ''बजट उत्तरदायित्व'' के लिए प्रतिबद्धता दिखाई है। यद्यपि निकृष्टतम को कुछ छोटी रियायतों के साथ, ''यह हमेशा की तरह कामकाज'' का कोड़ है। कई अन्य विकसित लोकतंत्रों की तरह, एओतियारोआ न्यूजीलैंड ने कुल मतदान में गिरावट और राजनेताओं के प्रति बढ़ती कटुता को देखा है। यह एक ऐसा रूझान है जिसकी लेबर–ग्रीन गठबंधन द्वारा उलटने की कोई संभावना दिखाई नहीं देती है।

संसदीय क्षेत्र के बारह, यद्यपि, नवउदारवाद को चुनौती देने वाले नवाचारी प्रोजेक्ट पाये जा सकते हैं। अन्य सामाजिक विज्ञान विषयों के सहयोगियों के साथ, समाजशास्त्री प्रत्यालोचना और आशा की संस्कृति को पुनर्जीवित करने और प्राधान्य–विरोधी संस्थाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इन आशावान घटनाक्रमों में कट्टरपंथी वामपंथ थिंक टैंक, आर्थिक एवं सामाजिक शोध एओतियारोआ (ESRA) की नींव रखना, कॉउटरफ्यूचरस : वामपंथी विचार एवं व्यवहार एओतियारोआ, सक्रियकर्त्ताओं और शिक्षाविदों की आवाजों को एक साथ लाने के लिए एक प्रकाशन का शुभारंभ; और सामाजिक आंदोलनों, प्रतिरोधों और सामाजिक परिवर्तन (SMRSC) की वार्षिक कांफ्रेस का आयोजन सम्मिलित थे। तीनों पहले नवउदारवादी यथास्थिति को चुनौती देने के लिए मजबूत प्रतिबद्धता की प्रतीक है।

ई. एस. आर. ए. को सार्वजनिक तौर पर 2016 में प्रारम्भ किया गया। इसका विचार एओतियारोआ न्यूजीलैंड में वामपंथी थिंक टैंक की व्यवहार्यता का अन्वेषण करने वाली सू ब्रेडफोर्ड की डाक्टोरल थीसीस से पनपा। लाभार्थी और गरीब समूहों के लिये लंबे समय से कार्य कर रहे सक्रियकर्त्ता और पूर्व ग्रीन सांसद, ब्रेडफोर्ड ने शिक्षाविदों और सक्रियकर्त्ताओं को ''प्रतिरोध, एकजुटता और आशा की संस्कृति'' को रोपित करने के लिए एकजुट किया। यह शोषित, और हाशिये पर लोगों की उम्मीदों और मुद्दों को सूचित करने एवं बदलने के लिए कार्य करेगी।'' (https://esra.nz/about/) प्रारंभिक पहलों में देश के आवासीय संकट के बारे में पूछताछ, आर्थिक नियोजन पर पुनर्विचार, और राजनैतिक संगठनों के नये स्वरूपों पर चर्चा सम्मिलित हैं।

ई. एस. आर. ए. का कुआपापा (कार्यक्रम या प्रयोजन का माओरी शब्द) एओतियारोआ न्यूजीलैंड में माओरी संप्रभुता को मान्यता (जिसका देश के संस्थापक दस्तावेज, वेतांगी संधि में वादा किया गया था लेकिन जिसे आज तक किसी भी सरकार ने सम्मानित नहीं किया) देने के लिए दृढ़ रूप से प्रतिबद्ध है। यह पहल ''पूंजीवाद और उपनिवेशवाद के परे जाने के व्यवहारिक तरीकों'' की रणनीतियों को

>>

तलाशने का प्रयास करती है। ये सामाजिक विज्ञानों के लिए अधिक खास बनने वाली चैतन्यता–कि मान्य और पैनी दृष्टि वाले ज्ञान के स्वरूप ''नीचे से उभरते'' हैं और यह कि ऐसा ज्ञान यह सोचने के लिए आवश्यक है कि सामाजिक संगठन के वैकल्पिक स्वरूप कैसे आकार ले सकते हैं, द्वारा मार्गदर्शित होती हैं।

इसी प्रकार की चैतन्यता नये प्रकाशन काउंटरफ्यूचरस को जीवंत बनाती है। इस जर्नल का उद्देश्य ''हमारे समाज, को समझने, कल्पना करने और प्रभावित कैसे किया जाए पर हस्तक्षेप करना और बहस का शुभारंभ करना है'' (https://counterfutures.nz) यह अकादमिक शोधकर्त्ताओं और सामुदायिक समूहों, यूनियनों और सक्रिय संगठनों में संलग्न द्वारा उत्पादित ज्ञान के मध्य संवाद स्थापित करने का प्रयास करता है। सहकर्मी समीक्षा वाले शैक्षणिक लेखों के साथ, जर्नल समकालीन राजनैतिक और सामाजिक मुद्दों पर हस्तक्षेप और सक्रियकर्त्ताओं और विद्वानों के साथ साक्षात्कार का प्रकाशन भी करता है। काउंटरफ्यूचरस पुस्तकों की स्वतन्त्र दुकानों और अग्रणी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में व्यापक रूप से उपलब्ध है और प्रकाशन के छः महीनों के भीतर यह अपनी सामग्री को निशुल्क आनलाइन रिलीज करता हैं। यह एक ऐसी पद्धति है जो यह सुनिश्चित करती है कि यह जर्नल पेवॉलस (parywalls) के पीछे अटकता नहीं है। काउंटरफ्यूचरस की तरफ आकर्षित विविध–तापूर्ण पाठकों की उपस्थिति मजबूत शोध द्वारा सूचित वैकल्पिक सोच और राजनैतिक संगठनों की नवीन संभावनाओं के लिए इच्छा को प्रमाणित करती है।

काउंटरफ्यूचरस के पहले तीन अंकों में विविध पृष्ठभूमि के लेखक सम्मिलित हैं : LGBTQI + समूह, समाजशास्त्र, माओरी सक्रियतावाद, मनोविज्ञान, जेल उन्मूलनवादी, दर्शनशास्त्र, गरीबी–विरोधी समूह, इतिहासकार, संघवादी, अपराधशास्त्र, पर्यावरणीय संगठन और संचार अध्ययन। यह सूची सक्रियकर्त्ता और अकादमिक विभाजन पर पुल बनाती है और यह सशक्त रूप से पार–वैषयिक भी है।

यही लोकाचार SMRSC की वार्षिक कांफ्रेस में स्पष्ट दिखाई देता है। हाल ही में आये तुर्की शिक्षाविद ओजान नादिर अलाकवुक्लर द्वारा 2014 में प्रथम बार आयोजित कांफ्रेस तेजी से आगे बढ़ी है। इसकी तीसरी पुनरावृत्ति ने 400 से अधिक लोगों को आकर्षित किया और एओतियारोआ के अतिरिक्त–संसदीय वामपंथियों के लिए यह ऐतिहासिक घटना मानी गई – 1970 के दशक के बाद पहली बार इतनी सारी भिन्न पृष्ठभूमियों के लोग इतनी बड़ी संख्या में एक साथ आये थे। कांफ्रेस में आये लेख माओरी संप्रभुता, अर्थव्यवस्था के प्रति वैकल्पिक दृष्टिकोण, पसिफिका सक्रियतावाद, काम का भविष्य, जलवायु न्याय, स्वास्थ्य और विकलांगता न्याय और समकालीन संघवाद पर थे। महत्वपूर्ण बात यह थी कि प्रतिभागी सक्रियता और अकादमिक पृष्ठभूमि दोनों से आये थे (http://counterfutures.nz/2/editorial.pdf)।

SMRSC प्रतिभागियों और आयोजकों ने विविधता से उभरने वाले तनावों का सामना उन्हें कमतर करके या टालने की बजाय रचनात्मक रूप से किया। 2015 में SMRSC कांफ्रेस ने ज्ञान के उत्पादन और प्रसार की सक्रियता और अकादमिक दृष्टिकोणों के मध्य तनाव का खुलासा किया। इस खुलासे ने 2016 कांफ्रेस की थीम ''अकादमिक–सक्रियता विभाजन'' को पैदा किया। परिणा–मस्वरूप, 2016 कांफ्रेस ने माओरी और पाकीहा (यूरोपीय वंशज के एओतियारोआ न्यूजीलैंड निवासी) वामपंथीयों के मध्य चल रहे तनावों पर प्रकाश डाला, जिसने 2017 की कांफ्रेस की थीम, Ka Whawhai tonu maitu, पूंजीवाद के परे–उपनिवेशवाद के परे को प्रेरित किया (https://esra.nz/socialmovements2017/)।

गहराती असमानता और संसदीय राजनीति से असंलग्नता की पृष्ठभूमि के बावजूद, सजग आशावाद कारण हैं। पहला, विविधता पूर्ण कर्त्ताओं का एक साथ आना अतिरिक्त संसदीय वामपंथ पर पुनः अभिसरण का संकेत देता है। कई अन्य विकसित देशों की तरह, एओतियारोआ न्यूजीलैंड ने वामपंथ के विखण्डन – जो तथाकथित भौतिकवादी वामपंथी और पहचान की राजनीति के मध्य विभाजन के द्वारा भी चिन्हित हुआ – को देखा है। चल रहे तनावों के बावजूद, ये नये पहल सुझाव देती हैं कि ये वास्तव में अलग ज्ञानक्षेत्र नहीं है और प्रभावी सामाजिक परिवर्तन इस मान्यता पर निर्मित होता है कि भौतिक और सांस्कृतिक द्वन्द्वात्मक रूप से गुथे हुए हैं।

दूसरा, ये पहले इस धारणा के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता दर्शाती है कि सामाजिक आंदोलनों और सक्रियता से उत्पन्न ज्ञान वैध और अत्याधुनिक है। शैक्षणिक जगत के लोगों के लिए, इस प्रतिबद्धता में यह सुनिश्चित करना कि उनका कार्य उन समूहों के लिए उपयोगी हो जिनके साथ वे सहयोग करते हैं और शोध करते हैं। इस संबंध में लोक समाजशास्त्र और सक्रियता विद्वता के बढ़ते क्षेत्र के साथ देशज विद्वान लिंडा तुहिवाई स्मिथ का प्रभाव महत्वपूर्ण है। ठोस सामाजिक संघर्षों से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को शैक्षणिक जगत में उत्पन्न ज्ञान के साथ जोड़ने से, नये ज्ञान का एक उत्पादक क्षेत्र आकार लेता है।

अंत में, विभिन कर्त्ताओं के मध्य सहयोग और उनके द्वारा उत्पन्न ज्ञान फैलाव। विस्तार प्राधान्य–विरोधी प्रोजेक्ट को आधार देता है : एक ऐसा प्रोजेक्ट जो यह पूछने की हिम्मत करता है कि हम समाज को कैसे भिन्न प्रकार से संयोजित कर सकते हैं। इसमें राजनैतिक और आर्थिक संगठनों के नये स्वरूपों को तलाश कर, उपनिवेशों को स्वतन्त्र कर, और अधिक वहनीय पर्यावरणीय परिपाटियों को प्रारंभ कर समानता के विचार को पुनर्जीवित करना सम्मिलित है। यह प्रोजेक्ट अभी प्रारंभिक चरण में है और सच में नाजुक है लेकिन 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद की स्थिति दर्शाती है कि जब कोई विकल्प सामने नहीं होगा तो हम ''सामान्य रूप से कार्य'' के साथ अटके रहेंगे। सक्रियकर्त्ताओं और शैक्षणिक जगत के नये और उत्पादक तरीकों से सहयोग करने के लिए एक साथ आने की एओतियारोआ न्यूजीलैंड की ये पहले वैकल्पिक भविष्य के वादे को प्रस्तुत करती हैं। ■

डायलन टेलर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Dylan.Taylor@vuw.ac.nz>

> एक देशज अपराधशास्त्र की तरफ

रोबर्ट वेब, युनिवर्सिटी ऑफ ऑकलैंड, एओटिरोआ, न्यूजीलैंड

अपने लोगों की बेरंग वर्तमान स्थिति को देखते हुए एक पूर्वज के पुराने प्रिंट में माओरी लोगों के गर्वीले अतीत का प्रतीक है। फ्रीपिक से लिये चित्र का अर्बु द्वारा फोटोमान्टाज

एओटिरोआ, न्यूजीलैंड में, माओरी का सामाजिक हाशिये पर होना अपराधीकरण और उत्पीड़न की असंगत में स्पष्ट है – एक स्थिति, जो कि अन्य स्थानीय लोगों जिन्होंने आंग्ल–अधिवासी देशों में व्यापक निर्वासन को अनुभव किया है, के समांतर है। सामान्य जनसंख्या के सिर्फ 15 प्रतिशत की अल्पसंख्यक आबादी वाले, देश के अन्य नागरिकों की तुलना में माओरी के लिए गिरफ्तारी, सजा और दंडात्मक सजाओं का अनुभव करने की अधिक संभावना है। माओरी परंपराओं पर आधारित अभिनव सुधारात्मक न्यायिक प्रथाओं के लिये न्यूजीलैंड की अंतर्राष्ट्रीय साख के बावजूद, इसकी कारावास दरें तुलनात्मक रूप से उच्च बनी हुयी हैं– एक स्थिति जो कि विशेष रूप से माओरी के लिये हानिकारक रही है जो कि देश के पुरूष कैदियों का 50 प्रतिशत और महिला कैदियों की 60 प्रतिशत बनाते हैं। व्यापक मान्यता के बावजूद कि यह व्यवस्था अपराध की दरें घटाने में विफल रही है और कैदियों के बच्चों और परिवारों के द्वारा सामाजिक बहिष्कार की गंभीर समस्या अनुभव करने का कारण बनती हैं हाल ही के समाचार रिपोर्टें बताती है कि जेल कैदी संभवतया बढ़ते रहेंगे।

माओरी पर केंद्रित आपराधिक न्याय हस्तक्षेप का औपनिवेशक काल से वर्तमान तक विभिन्न तरीकों से तार्किकीकरण किया गया है। देश के इतिहास में कई बार, न्यूजीलैंड राज्य एजेंसियों के प्रतिनिधियों और अधिकारियों ने माओरी के बीच आपराधिक हमलों को माओरी समुदायों की परंपराओं और संरचनाओं में स्वयं जाहिर होने वाली एक अनुमानित स्वस्पष्ट सामाजिक समस्या के रूप में समझाया है। हाल ही में, अक्सर माओरी को सक्रिय राज्य हस्तक्षेप की आवश्यकता वाली एक जनसंख्या के रूप में बताते हुये, जोखिम घटकों और अपराधजनित जरूरतों के उजागर होने के विचार विश्लेषण पर हावी होने लगे हैं। अधिकतर नीतिगत प्रतिक्रियायें ब्रिटिश और उत्तरी अमेरिकन संदर्भों से उत्पन्न सैद्धांतिक और आनुभाविक विश्लेषणों पर आधारित होती हैं, फिर भी वे माओरी के चल रहे सामाजिक नियंत्रण के बारे में बताते हैं– काफी हद तक

>>

जिनके बारे में सैंद्धातिकरण किया गया है, अर्थात् माओरी और सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक संदर्भों जिनमें अंतर्निहित सिद्धांत उत्पन्न हुये हैं, के मध्य सामाजिक और सांस्कृतिक मतभेदों की अनदेखी करते हुए।

दशकों से माओरी ने न्यूज़ीलैंड में राज्य नीतियों और संस्थानीकरण में प्रणालीगत नस्लवाद को चुनौती दी है। इस दृष्टिकोण की आलोचनायें मोअना जैकसन (1998) की प्रभावशाली रिपोर्ट द माओरी एंड द क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम– ही व्हाइप्पंगा होउ में दिखायी देती है, जो कि अपराधिक न्याय को माओरी दृष्टिकोण से देखती है। यह विश्लेषण औपनिवेशवाद और थोपी गयी न्यायिक व्यवस्था को शामिल करते हुये उन सामाजिक और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का वर्णन करता है, जिन्होंने माओरी जीवन को प्रभावित किया है। यह रिपोर्ट न्यूज़ीलैंड की अपराध न्यायिक व्यवस्था की समालोचनात्मक समझ को और उन तरीकों को जो सांस्कृतिक मूल्य प्रथाओं और दृष्टिकोणों को प्रभावित करते है, के बारे में लगातार सूचित करती है।

बेशक, सांस्कृतिक विविध मूल्यों को प्रतिबिंबित करने के लिये न्यायिक प्रथाओं में सुधार के लिये और अपराधिक न्याय पर माओरी चिंताओं को हल करने के लिये राज्य द्वारा प्रयास किये गये हैं। 1989 के बाद से युवा न्याय व्यवस्था में बदलाव, जिसमें परिवार समूह चर्चायें और चिल्ड्रन, यंग पर्सनस एंड देयर फैमिलीज एक्ट 1989 (CYPFA) की शुरूआत शामिल है, इसका चित्रण करते हैं। ऐसा कर वे युवा अपराधियों को औपचारिक न्याय व्यवस्था से दूर करते हुये, परिवार समूह चर्चाओं का उपयोग अपराधियों और उनके परिवारों को पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ लाते हैं। न्याय की कांफ्रेसिंग वाली शैली माओरी दर्शन से ली गयी मानी जाती है जो सामाजिक संबंधों में सामूहिक जिम्मेदारी को देखते हैं। हालांकि कांफ्रेसिंग विकल्पों के उपलब्धता के बावजूद, माओरी 10 से 16 वर्ष के युवा और बच्चों के बढ़ते अनुपात का निर्माण करते हैं जिन पर युवा न्यायालयों में मुकदमा चलाया जा रहा है–एक आंकड़ा जो अब युवा न्यायालय मुकदमों में 62 प्रतिशत पहुंच गया है।

कुछ शोधकर्ताओं ने यह बताया है कि कॉंफ्रेंसिंग मॉडल राज्य न्याय के अंतर्निहित सिद्धांतों और संरचनाओं को बुनियादी रूप से नहीं बदलता है। इसके बजाय, राज्य सत्ता सामाजिक नियंत्रण के अन्य रूपों के माध्यम से जारी रहती है। जुआन टौरी नोट करते हैं कि परिवार समूह कॉंफ्रेंसिंग काफी हद तक गैर–माओरी प्रथा हैं जो कि केवल कुछ ही माओरी सांस्कृतिक प्रथाओं को उपयोग करती हैं। उनका तर्क है कि CYPFA खुद ही जैकसन के न्याय में प्रजातिकेंद्रिकता की आलोचना से प्रभावित है और यह कि यह प्रक्रिया माओरी संगठनों के निवेदन के कारण, कुछ माओरी घटकों को शामिल करती है। फिर भी, वह कहते हैं, परिवार समूह कांफ्रेंसिंग व्यवहार में काफी हद तक गैर–पारंपरिक हैं, यद्यपि माओरी रिवाजों के कुछ घटक अधिकारियों द्वारा प्रशासित प्रथाओं में शामिल किये गये हैं।

शैक्षणिक जगत और सामाजिक विज्ञानों में सार्थक विश्लेषण और आलोचनाओं का विकास करना माओरी की एक चिंता रही है, जिस कारण हमें उन तरीकों की जांच करने की आवश्यकता है जिसमें हम माओरी के रूप में सामाजिक स्थितियों पर शोध करते हैं। हम में से बहुत से लोग स्वदेशी समुदायों के विकास का समर्थन करते हैं, और लिंडा स्मिथ के डिकॉलोनाइजिंग मैथेडोलोजीज जैसे एक काम ने माओरी और अन्य विद्वानों को सिद्धांतों और प्रविधियाँ, जो स्थानीय अनुभवों और ज्ञान को पहचानते हैं, का अन्वेषण करने के लिये प्रभावित किया है। इसी प्रकार, हम में से बहुत से लोग समालोचनात्मक स्थानीय अपराधशास्त्र का विकास करने की आशा रखते हैं जो माओरी के गलत कामों और सामाजिक हानियों की अवधारणाओं और अनुभवों को पहचानती है।

अपराध–पर–कठोर प्रशासनिक निर्धारण से आगे राज्य की प्रतिक्रियाओं को बढ़ाते हुये जिसने दंडात्मक प्रतिक्रियाओं का विस्तार किया है जैसे बंदीकरण, को सैंद्धांतिक उपकरणों से आगे बढ़ने की आवश्यकता होगी जो माओरी की सामाजिक वास्तविकता का ध्यान रखने या जवाब देने में असफल होते हैं। इसी प्रकार इसके लिए सामाजिक सैद्धांतकारों जो स्थानीय लोगों के साथ काम करें और मुक्त शोध साझेदारी बनाये की आवश्यकता होगी। स्वदेशी अपराधशास्त्र बनाने के प्रयास में अपराधों के विभिन्न अंतर्संबंधित तत्वों, सामाजिक हानि के सामूहिक अनुभवों की ओर ध्यान देना शामिल करना होगा। इसको सामाजिक हाशियाकरण और जेल आबादी में अधिक प्रतिनिधित्व पैदा करने में राज्य और आपराधिक न्याय व्यवस्था की भूमिका का परीक्षण करना होगा। एक स्वदेशी अपराधशास्त्र जो न्याय व्यवस्था से सबसे अधिक प्रभावितों के अनुभवों को शामिल करना चाहता है को प्रशासनिक अपराध नियंत्रण पर आसक्ति के परे और राज्य द्वारा महत्वपूर्ण माने गये मुद्दों के परे जाना चाहिये।

नये दृष्टिकोण उन तरीकों पर अधिक ध्यान देंगे जिसमें औपनिवेशिता, संस्थागत नस्लवाल और प्रणालीगत हिंसा स्थानीय लोगों को नियंत्रित करने और हाशिये पर करने का काम करते हैं – जैसा कि माओरी विद्वान ट्रैसी मैकिंतोश और खायली क्विंस ने, जेल में माओरी महिलाओं के अनुभवों पर, और अंतर्पीढ़िय बंदीकरण और उत्पीड़न से जुड़ी हुयी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हुये अपने शोध में दिखाया है।

एक स्वदेशी अपराधशास्त्र को माओरी अनुभवों से जुड़ना चाहिये, और इसे सामाजिक रूप से हानिकारक अपराधों और संबंधित सामाजिक संरचनात्मक स्थितियों के विश्लेषण को शामिल करना चाहिये। संभावित रूप से, इसमें वैतांगी अधिकार संधि के इनकार और पुनः परिभाषित करने, या राज्य या अन्य शक्तिशाली समूहों के कार्यों पर जो कि माओरी और अन्य समुदायों के लिये नुकसानदेह हैं, पर शोध को भी शामिल किया जा सकता है। उपनिवेशवाद को हटाने की ओर निर्देशित, इसका उद्देश्य माओरी को सशक्त करना और माओरी सांस्कृतिक ढांचे से निर्देशित न्याय पर सामुदायिक नियंत्रण है। ■

रोबर्ट वेब से पत्र व्यवहार हेतु पता <robert.webb@auckland.ac.nz>

> अवकाश का अध्ययन उनका जुनून था

ईश्वर मोदी

अहमदाबाद में 23 मई, मंगलवार की सुबह मुझे प्रोफेसर बी. के. नागला के द्वारा प्रोफेसर ईश्वर मोदी के 76 वर्ष की उम्र में निधन का दुखद समाचार प्राप्त हुआ। कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते है जो मृत्यु पश्चात् भी नहीं मरते क्योंकि उनके विचार, यादे एवं आत्मीयता पूर्ण कार्य हमेशा जीवित रहते हैं। प्रोफेसर ईश्वर मोदी भी ऐसे ही व्यक्तित्व थे। वैश्विक समाजशास्त्र के लिये और विशेष रूप से भारतीय समाजशास्त्र के लिये, 2017 को दो दुखद प्रयाण के लिये याद किया जायेगा, पहले हमने प्रोफेसर डी. एन. धनागरे को खोया एवं अब प्रोफेसर ईश्वर मोदी।

प्रोफेसर ईश्वर ने अपने शैक्षणिक कैरियर की शुरूआत 1974 में राजस्थान विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग से की जो कि भारत के जयपुर शहर में स्थित है। मैं दो वर्ष पश्चात् इस विभाग से आया। शुरूआत से ही ईश्वर प्रसाद मोदी समाजविज्ञान में अपने साथियों एवं छात्रों के प्रिय रहे। उन्होंने अवकाश अध्ययन के क्षेत्र में अपनी पी. एच. डी., प्रतिष्ठित विद्वान प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में की। उनके शैक्षणिक कैरियर में अनेकों उपलब्धियां शामिल है। उन्होंने भारतीय समाजशास्त्रीय सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में एवं राजस्थान समाजशास्त्रीय परिषद के अध्यक्ष के रूप में समाजशास्त्र के क्षेत्र में अपनी सेवाये दी। उनकी वैश्विक समाजशास्त्र से संलग्नता की शुरूआत 1986 से हुयी जब दिल्ली में आई. एस. ए. विश्व कांग्रेस का आयोजन हुआ। उन्होंने बड़ी संख्या में समाजशास्त्र के विद्यार्थियों को विश्व कांग्रेस एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया। साथ ही उन्होंने युवा साथियों को अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्र सोशियोलॉजिकल संघ से जुड़ने के लिये प्रोत्साहित किया।

प्रोफेसर मोदी समाजशास्त्र के वैश्विक ज्ञान को हिन्दी भाषी विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिये प्रतिबद्ध थे। उन्होंने ग्लोबल डॉयलॉग, जो आई. एस. ए. की बहुभाषी

>>

पत्रिका है को हिन्दी में प्रकाशित करने में अहम भूमिका निभायी। उनके लिये ग्लोबल डॉयलॉग को हिन्दी में लाना एक मिशन था परन्तु साथ ही यह एक शैक्षणिक चुनौती भी थी। मुझे प्रोफेसर मोदी के साथ इस उद्यम में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ एवं मैंने उनके समर्पण का अवलोकन किया। उन्होंने अपनी टीम के सदस्यों के साथ समानता एवं प्रजातांत्रिक भावना से कार्य किया। चूंकि मैं एक अनुशासित व्यक्ति नहीं हूं, कई बार ग्लोबल डॉयलॉग के हिन्दी प्रकाशन में कुछ विलंब हुआ। परन्तु उन्होंने हमेशा मेरे अनुवादों की सराहना की। उन्होंने संपादकीय बोर्ड के अन्य सदस्यों, डॉ. रश्मि जैन, डॉ. ज्योति सिडाना, डॉ. प्रज्ञा शर्मा, डॉ. निधि बंसल एवं श्रीमान पंकज भटनागर की प्रतिबद्धता की भी सराहना की। इसी प्रकार उन्होंने भारतीय समाजशास्त्र परिषद के तत्वावधान में हिन्दी में शोध पत्रिका को शुरू करने के लिये दृढ़ प्रयास किये। यह एक गुणवत्तापूर्ण शोध पत्रिका है जिसका प्रकाशन अब नियमित रूप से होता है। प्रोफेसर मोदी के इन सभी प्रयासों ने उन समाजशास्त्री विद्यार्थियों को जो हिन्दी भाषा में कार्य करते हैं अत्यधिक शैक्षणिक लाभ पहुंचाया है। मैं उम्मीद करता हूं कि प्रोफेसर मोदी की दुखद मृत्यु के बावजूद, ग्लोबल डॉयलॉग का हिन्दी संस्करण इसी शैक्षणिक प्रतिबद्धता के साथ निरन्तर प्रकाशित होता रहेगा।

अपनी कई रूचियों के साथ, प्रोफेसर मोदी का कई क्षेत्रों में योगदान रहा है, जिनमें बाल कल्याण, युवा सक्रियता, लैंगिक न्याय, कार्यशील वर्ग के मुद्दे एवं सीमान्त जन शामिल है। भारत में एवं भारत के बाहर की अत्यधिक यात्राओं के दौरान, उन्होंने स्वास्थ्य, गरीबी, पारिस्थितिकी, जनसांख्यिकी, सामाजिक आन्दोलन, मतदान व्यवहार एवं मानवाधिकार के मुद्दों पर समाजशास्त्रीय आवाज में बात की। अवकाश, पर्यटन एवं संचार मीडिया, जो कि उनके विशेषज्ञता के क्षेत्र थे, के अलावा प्रोफेसर मोदी ने सामाजिक सिद्धान्त के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। आई. एस. ए. में RC 13 (अवकाश पर शोध समिति) के सदस्यों के द्वारा उनकी गंभीर प्रतिबद्धता को हमेशा याद किया जायेगा। उन्होंने दुनिया के लगभग हर देश में शैक्षणिक यात्रा की। वो पुस्तकों एवं शोध पत्रों के अद्भुद लेखक थे। उनकी शिक्षक आन्दोलन एवं अन्य सामाजिक मुद्दों में संलग्नता ने उन्हें एक जन बुद्धिजीवी एवं विवेचनात्मक समाजशास्त्री के रूप में स्थापित किया। प्रोफेसर मोदी को उनके उदाहरणीय वात्सल्य के लिये भी याद किया जायेगा। वो और उनका परिवार हर आगंतुक को अत्यन्त प्यार एवं सम्मान देते थे। वास्तव में वे दुर्लभ लोग हैं। हर किसी को अपने परिवार के सदस्य की तरह मानना, उनके लिये, अवकाश का एक परिभाषित सिद्धान्त था।

प्रोफेसर मोदी का निधन उनके परिवार एवं मित्रों के लिये एक बड़ा व्यक्तिगत नुकसान है। समाजशास्त्र जगत में उनकी भौतिक उपस्थिति की कमी रहेगी परन्तु उनकी प्रेरणा हमेशा हमारे साथ रहेगी। अलविदा प्रोफेसर मोदी, समाजशास्त्रीय समुदाय आपको बहुत याद करेगा, परन्तु आप हमेशा हमारी यादों में रहेंगे। ■

राजीव गुप्ता,
अध्यक्ष, भारतीय सामाजिक विज्ञान संघ

> प्रेरणा और प्रोत्साहन का एक स्त्रोत

अपने गृह नगर जयपुर में ईश्वर मोदी

प्रोफेसर ईश्वर मोदी का मई 2017, में कैंसर से लम्बी लड़ाई के पश्चात् निधन हो गया। वो नई पीढ़ी के भारतीय समाजशास्त्रीयों एवं नई पीढ़ी के अवकाश के समाजशास्त्रीयों को निरंतर समर्थन एवं मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। उनकी मृत्यु, भारतीय समाजशास्त्र, अवकाश को समाजशास्त्र एवं विस्तृत रूप से शैक्षणिक जगत के लिये दुखद क्षति है।

ईश्वर, जब आई. एस. ए. की रिसर्च कमेटी 13 (अवकाश का समाजशास्त्र) में आये थे, तब तक वो अवकाश एवं पर्यटन के क्षेत्र में, वैश्विक स्तर पर एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री के रूप में स्थापित हो चुके थे। उनको अध्यक्ष पद के लिये प्रोत्साहित किया गया ताकि वो RC 13 को बदलती हुयी परिस्थितियों के दौरे में नेतृत्व प्रदान कर सकें। उन्होंने इस कार्य को गंभीरता एवं उच्च भावना के साथ लिया एवं RC 13 में एवं विस्तृत रूप से आई. एस. ए. में नये सदस्यों को आकर्षित किया। वो कई बार अध्यक्ष पद पर रहे एवं निरंतर रूप से प्रभावशाली शोध प्रोजेक्ट लेते रहे। उन्होंने कई मोनोग्राफ एवं संपादकीय संस्करण भी

>>

लिखे—यहां तक कि उनका अंतिम संपादकीय संस्करण (लेजर, हैल्थ एंड वैल बींग) इसी वर्ष अप्रेल में प्रकाशित हुआ जिसमें RC 13 के दो सहयोगी सह—लेखक है। RC 13 के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने RC 13, का आई. एस. ए. कार्यकारिणी में प्रतिनिधित्व किया एवं वहां अपने सहयोगियों के साथ मिलकर अच्छी तरह कार्य किया।

RC 13 एवं आई. एस. ए. से परे, ईश्वर काफी गहराई से दो समानान्तर विकास में भी संलग्न रहे। वे कई बार वर्ल्ड लेजर एण्ड रिक्रियेशन एसोसियेशन, अवकाश की अग्रणी अंतराष्ट्रीय पेशेवर संस्था, जो अब वर्ल्ड लेजर के नाम से जानी जाती है, के निदेशक मंडल में चुने गये थे। उनका इस संस्था द्वारा इतना सम्मान किया जाता था कि संस्था ने उनको माननीय आजीवन सदस्यता प्रदान कर दी। दूसरा विकास था, इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी में उनकी सक्रिय संलग्नता, जिसके कारण उनको 2015 में संस्था के द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें भारतीय समाजशास्त्र को बढ़ावा देने के प्रयासों के लिये, एवं समाजशास्त्रीय शोध एवं शिक्षण में उनके वैश्विक स्तरीय योगदान के लिये प्रदान किया गया।

जब उनके निधन की खबर RC13 के सदस्यों को भेजी गयी, तो गम के माहौल को यादों एवं धन्यवाद के शब्द जो सदस्यों ने एक दूसरे के साथ साझा किया, को याद करके कम किया गया। सभी के पास ईश्वर के साथ उनकी पहली मुलाकात का कोई किस्सा था कि किस प्रकार यह मुलाकात लम्बी एवं पुरानी दोस्ती का आधार बनी। RC13 के सबसे वरिष्ठ सदस्यों से लेकर हमारे कई नये सदस्यों तक, हम सबने एक जैसा महसूस किया। ईश्वर हमारे पूर्व अध्यक्ष, हमारे मेंटर एवं हमारे शिक्षक थे। वे एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने हमें यह महसूस कराने के लिये कि हमारा स्वागत है, अपने आप को समर्पित कर दिया। वो ईश्वर ही थे जिन्होंने हमारे निर्णय लेने की समावेशी आवाज एवं आई. एस. ए. आयोजनों में हमारे सत्रों की समावेशी आवाज साथ ही हमारे मिड—टर्म संगोष्ठियों की नींव रखी। मैं व्यक्तिगत रूप से RC13 एवं आई. एस. ए. में ईश्वर की उपस्थिति को मूल्यवान समझता था। मैं हमेशा उनके प्रोत्साहन एवं उनकी उपस्थिति के लिये आभारी रहूंगा। मैं सबसे पहले उनसे हँगरी में RC13 की मिड—टर्म संगोष्ठी में मिला था, यद्यपि हमने पहले से कई ई—मेल एक दूसरे को भेज चुके थे। RC13 एवं आई. एस. ए. से जुड़े हुये अन्य लोगों की तरह यह सोच कर बहुत दुखी हूं कि अब मैं उनको कभी नहीं देख पाऊँगा। परन्तु साथ ही मैं सोचता हूँ कि हम खुशनसीब हैं कि हम ईश्वर मोदी को जानते है एवं उनके संसार का हिस्सा रहे हैं। ■

कार्ल स्परेकलेन
लीड्स मेट्रोपॉलीटन विश्वविद्यालय, यू.के., उपाध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सेक्रेटरी, अवकाश का समाजशास्त्र (RC13), आई.एस.ए. शोध समिति।

> टर्किश सम्पादकीय दल का परिचय

गुल कोरबासिया ग्लू और **इरमाक इवरेन**, मध्य पश्चिम टेकनिकल विश्वविद्यालय, तुर्की

हम जनवरी 2015 में ग्लोबल डॉयलॉग (GD) की तुर्की संपादकीय टीम बने। हमारी टीम में दो सदस्य है, गुल कोरबासियोगलू एवं इरमाक इवरेन, दोनों ही मध्य पश्चिम टेकनिकल विश्वविद्यालय जो कि अंकारा तुर्की में है, के पी. एच. डी. विद्यार्थी हैं। हमारे मित्र, एहमत सेहान टोटन, भी हमारे साथ अंकों को डिजाइन करने में मदद करते हैं।

विश्व भर की नवीनतम समाजशास्त्रिय चर्चाओं से जुड़े रहना एवं उनका तुर्की भाषा में अनुवाद कर पाना हमें खुशी देता है, परन्तु साथ ही यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य एवं एक काफी लम्बी प्रक्रिया भी है। यह सिर्फ अनुवाद नहीं है बल्कि हमें अंग्रेजी (ग्लोबल डॉयलॉग) को (तुर्की) कुरिसिल डॉयलॉग (Kuresel Diyalog) (संपूर्ण पत्रिका की सुसंगता एवं अखंडता को ध्यान में रखते हुये) में बदलना पड़ता है। प्रक्रिया की शुरूआत उसी पल हो जाती है जब हमें GD के नये अंक के अंग्रेजी लेख प्राप्त होते हैं। सबसे पहले हम लेखों को बाँट लेते हैं। जब एक विशेष मुद्दे पर कई लेख होते हैं या कोई किसी विशेष देश के समाजशास्त्र से संबंधित होता है हम लेखों के अंतः संबंधों को ध्यान में रखते हैं—हमारी रूचि के क्षेत्रों के अनुसार एवं हमारे स्वयं के बौद्धिक ज्ञान को बढ़ाने के लिये। फिर हम सब समय सीमा तक कार्य पूरा करने के लिये मेहनत करते हैं। दो सदस्यी दल होने के कारण इसके लिए कड़ी मेहनत और जिम्मेदारी दोनों की आवश्यकता होती है।

जब हम दिये हुये लेखों का अनुवाद पूरा कर लेते हैं, तब हम उनको आपस में बदल लेते है ताकि हम सारे लेखों को पढ़ सके, अनुवाद कर सके एवं संपादन कर सके। हम यह मानते हैं कि दूसरी समीक्षा, पाठक के रूप में न कि अनुवादक की तरह, हमारे लिये संभव बनाती है कि हम पत्रिका को पाठक की दृष्टि से देख सके। यह पाठक समाजशास्त्री समुदाय एवं वे लोग हैं जो समाजशास्त्र में रूचि रखते हैं। जब हम कुछ ऐसी शब्दावली का सामना करते हैं जिन्हें टर्की भाषा में अनुवाद करना असंभव प्रतीत होता है, क्योंकि यह डर रहता है कि शाब्दिक अनुवाद करने से कहीं उसका अर्थ न बदल जाये, हम संबंधित साहित्य का अध्ययन करते है जो तुर्की में हो या हमारे प्रोफेसरों से परामर्श कर हम यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि यह शब्दावली अभी हाल ही में आयी है और यदि नहीं, तो हम इसका अनुवाद कैसे कर सकते हैं। जहां हमें उचित लगता है हम वहां तुर्की मुहावरों और का प्रयोग कर लेते है। पूरा अनुवाद करने के बाद, जिसमें चित्रों के कैप्शन भी शामिल है, हम सारे लेख, हमारे मित्र सेहान के पास भेज देते है जो डिजाइन की तकनीक में विशेषज्ञ है। जब खाका तैयार हो जाता है, तब हम अंतिम रूप से उसे देखते है। अंततः हमें Kuresel Diyalog के नये अंक को प्रस्तुत करने में गर्व होता है।

जैसे ही वो आई. एस. ए. की वेबसाइट पर पोस्ट होता है, हम हमारे समुदाय, विश्वविद्यालयों में हमारे साथियों एवं विशेष रूचि वाले समूहों, जिन्हें वैश्विक समाजशास्त्र में रूचि है, को सूचित करते हैं। ग्लोबल डॉयलॉग के अनुवाद ने हमें नये मुद्दों एवं समाजों से परिचय कराया है और हम अत्यन्त खुशी से तुर्की सोशियोलॉजिकल समुदाय के साथ हमारा उत्साह और उत्सुकता को साझा करते हैं। ■

इरमाक इवरेन ने अपनी बी. एस. सी. की उपाधि अर्थशास्त्र एवं प्रबंधन में इस्तांबुल बिलगी विश्वविद्यालय एवं लंदन स्कूल ऑफ इकनोमिक्स एवं पॉलिटिकल साइंस से प्राप्त की। फिर उन्होंने अपनी स्नातक की पढ़ाई अर्थशास्त्र में यूनिवरसाइट पेरिस 1—पेनथिओन सोरबोन, फ्रांस एवं मीडिया एंड कम्यूनिकेशन स्टडींस, गलाटासारे विश्वविद्यालय, इस्टानबुल से की। वर्तमान में वो समाजशास्त्र में अपनी डाक्टरेट की उपाधि, मध्य पश्चिम टेकनिकल विश्वविद्यालय, अंकारा से पारदेशीय धार्मिक संगठनों से फ्रॉस में तुर्की—मुस्लिम प्रवासियों के पारदेशीय धार्मिक संगठनों" विषय पर कर रही है। वे ओकान विश्वविद्यालय इस्तांबुल में सिनेमा एण्ड टेलिबिजन विभाग में प्रशिक्षक भी है।

गुल कोरबासियोगलू ने अपनी बी. ए. की उपाधि बिलकेन्ट विश्वविद्यालय, ऐनकारा से अंतराष्ट्रीय संबंधों में ली। इसी विश्वविद्यालय से वो अपनी डाक्टरेट कर रही है समाजशास्त्र में। उनका कार्य 'ट्रान्सफारमेशन ऑफ प्रोफेशनल ऑटोनोमी एंड अथोरिटी ऑफ द टर्कीश मेडिकल प्रोफेशन' पर है। उन्होंने शोध का कुछ अतिथि शोधार्थी के रूप में समाजशास्त्र विभाग, योर्क विश्वविद्यालय, यू. के. में किया। वर्तमान में वो राजनीति विज्ञान एवं राजनीतिशास्त्र विभाग, बिलकेन्ट विश्वविद्यालय में प्रशिक्षिका है। उनके रूचि क्षेत्र है, चिकित्सा समाजशास्त्र, व्यवसायों का समाजशास्त्र, कार्य एवं संगठन समाजशास्त्र एवं जेंडल अध्ययन।

गुल कोरबासिया ग्लू से पत्र व्यवहार हेतु पता
<gulcorbacioglu@gmail.com>
इरमाक इवरेन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<irmakevrenn@gmail.com>